आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 23 | उदयपुर रविवार 15 दिसंबर 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

संकट की सांसें झेलती लाह और भणत

-भुवनेश भानु-

सम्पूर्ण गांव एक परिवार के रूप में रहने के कारण जन्म से लेकर खेत-खलिहान तक के कामों में मिलजुल कर करने की रीत रही है। यह परम्परा ल्हास नाम से जानी जाती है। इसके अन्य नाम लाह, ला, लास सुनने को मिलते हैं। किसी काम में केवल रिश्तेदारों की मदद लेनी है तो सगा लाह, घर के सदस्यों और पड़ौसियों की मदद लेनी है तो हीरोली लाह और किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम से लोगों को बुलाया जाय तो उठाऊ लाह कही जाती है। लाह में काम करने वालों को लाहिया या लासिया कहा जाता है और लाह का आयोजन करने वालों को अजीत कहते हैं।

राजस्थान के पश्चिमांचल में जनजीवन का तानाबाना संस्कृति के ऐसे धागों से बुना रहता है जो परस्पर सौहार्द, समन्वय, सहयोग, करूणा, प्रेम-स्नेह से परिवार और समाज को महकाता है।

सम्पूर्ण गांव एक परिवार के रूप में रहने के कारण जन्म से लेकर खेत-खलिहान तक के कामों में मिलजुल कर करने की रीत रही है। यह परम्परा ल्हास नाम से जानी जाती है। इसके अन्य नाम लाह, ला, लास सुनने को मिलते हैं। किसी काम में केवल रिश्तेदारों की मदद लेनी है तो सगा लाह, घर के सदस्यों और पड़ौसियों की मदद लेनी है तो हीरोली लाह और किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम से लोगों को बुलाया जाय तो उठाऊ लाह कही जाती है। लाह में काम करने वालों को लाहिया या लासिया कहा जाता है और लाह का आयोजन करने वालों को अजीत कहते हैं।

लाह करने वाला दिन में तीन बार भोजन का आयोजन करता है और तीनों बार घी की 'घिलोड़ियां' लाहियों की थालियों में उड़ेली जाती हैं जब तक कि लाहिया मना नहीं कर देता है। आमतौर पर एकबार में 200-250 ग्राम तक घी परोसा जाता है। इन लाहों में महिलाएं ही भाग लेती हैं। हीरोली लाह में दिन में तीन बार भोजन लेकिन घी एकबार ही परोसा जाता है।

खेत में सूंड, सफाई करना हो, बुवाई, निदान करना हो, खूंटना, लाटा लेना हो या खारिया करना हो सामूहिक रूप से सभी मिलकर सहयोग करते हैं। एक खेत का काम निपटा कि दूसरे खेत में काम करने के लिए नौजवान अपने-अपने औजारों के साथ तैयार रहते हैं।

खेत में काम के अलावा ऊंटों के टोलों, बकरी और भेड़ के 'छोगे' के बालों की कटाई करनी हो तो उसके लिए भी लाह की जाती है लेकिन जानवरों से सम्बन्धित होने के कारण इसे 'लाव' कहते हैं। जानवरों के बालों को 'ला' कहा जाता है। ऊंट, भेड़, बकरी के लिए चैत्र माह में लाव होती है जबकि भेड़ के लिए भाद्र माह में लाव का आयोजन होता है।

पश्चिमी राजस्थान का बाड़मेर जिला मालाणी नाम से विख्यात रहा है। इस क्षेत्र की ढाई कोटड़ी में गूंगा सेठ गणेश, गरल के ठाकुर सुजानसिंह की एक-एक कोटड़ी और सांवलोर के पेमाराम जाट की आधी कोटड़ी का जिक्र लोकगीतों में सुनने को मिलता है जिन्होंने अकाल के दौरान ग्रामीणों को भोजन करवाकर भूख से बचाया। इस सम्बन्धी अनेक किस्से सुनने को मिलते हैं।

शिक्षक तनसुखदास तापड़िया के अनुसार संवत् 1996 के अकाल में बाड़मेर-जैसलमेर सड़क का निर्माण कार्य गूंगा गणेश द्वारा लाह का आयोजन कराया जाकर हजारों अकाल पीड़ितों को मुफ्त अनाज-भोजन उपलब्ध कराया गया। गरल से रामदेवरा तक का रास्ता ठाकुर सुजानसिंह द्वारा तैयार करवाया गया। जिले की प्राचीन ओरणें, नाड़ियां, तालाब इसके साक्षी हैं।

नन्दकिशोर शर्मा के अनुसार जैसलमेर के महारावल तेजसिंह परम्परानुसार प्रत्येक वर्ष के अन्त में अपने समस्त कुटुम्बी, सेना, नगरवासियों सहित सरोवर की रेत एवं गन्दगी हटाते थे लेकिन एक दिन गडसीसर तालाब में सफाई के दौरान धोखे से मारे जाने के बाद से शासक फिर ल्हास के लिए कभी गडसीसर नहीं आए। यह घटना आषाढ़ बदि 10 संवत् 1779 की है।

लाह का प्राण तत्व है भणत। भणत के बिना लाह अधूरी है। लाह का रंग, श्रम और रिश्तों की खुशबू भणत के साथ ही निखर पाती है। भणत का अर्थ रहने, पढ़ने और कृषक गीत से लगाया जाता है। सामूहिक रूप से जब खेत आदि स्थानों पर श्रम साध्य कार्य किया जाता है तो भणत ही लासियों को शक्ति प्रदान करती है। तब कृषक-औजार खई, सुरड़ियो, दांतरड़ी, दांतरड़ो, चौकसी, छाकनी, पडसी, कुल्हाड़ी, कुदाली, कसिया ही वाद्य यंत्र बन जाते हैं और लोकगीत भणत को सामूहिक रूप से गाते-गुंजाते काम की रफ्तार बढ़ जाती है। भणत के बोलों की शक्ति किसानों की श्रम शक्ति को दस गुना बढ़ा देती है और कार्य हल्का हो जाता है। भणत के बोलों की लय और एक साथ टेर लेने को 'बोकारना' कहते हैं। नाभि पर शब्द के उच्चारण का जोर पड़ते ही कृषक की शक्ति बढ़ जाती है और चित्त मस्त हो जाता है।

भणतों में हमरचो, अमलिड़ो, मोरिड़ो, महिड़ो, रामयो गान ग्रामीण अंचलों में सबसे ज्यादा प्रचलित हैं। धार्मिक भणत में लोकदेवी-देवता की स्तुति करने के साथ-साथ लोकदेवी-देवता की कहानी को प्रस्तुत किया जाता है। इण भणतों में शृंगार, आस्था, श्रद्धा का वर्णन होता और गीत की एक-एक पंक्तियां एक व्यक्ति द्वारा गूंजते बोल के साथ गाई जाती हैं और उसके पीछे सारे किसान 'ए भई ओ' जैसे शब्दों को उच्चारित करते हैं। टेर लेते हैं। बोकारते हैं। बोकारना का मतलब गीत की पंक्तियों के प्रति अपनी सहमति देना होता है। बोकारने के साथ ही कृषक अपने औजार एक-दूसरे से टकराते, घूमते, नाचते, बैठते हैं और कार्य करने का नशा चढ़ता हुआ दिखाई देता है। ये सारी क्रियाएं काम को हल्का कर देती हैं और मन-तन को ऊर्जावान बना देती है। कुछ नमूने-

आवो गोरा चवाण ए भाई ओ, माताजी री आण, जबरी नेणै जोत, उज्वाला री जोत, काली झंवरी काया, गोरा री है माया, फण नण घण उजवास, गोरा रो विश्वास, सिमरन छत्र भुज नाग, सबरा है बड़ भाग, ध्यावें जिणरे बैली आवे, लुव्व-लुव्व शीश झुकावें, शेष फणों रो नाग, भणतों रो बड़ भाग, खेवो गूगल धूप, भारत रो बड़ झूप, धवली गुडली खीर, गंगा जल रो नीर, धूपों रा धमरोल, नारेला खमरोज ए भाई ओ। **-धार्मिक भणत**

चढ़ियो रावल माल ए भाई ओ, गेंडा हड़ी ढाल, सिरोही तलवार, कबोणी कटार, दूनाना बन्दूक, लोंबी तीखी मूंख, धवला दाढ़ी घट, हाथों में सलवट, भूरियो झबरो ऊंट, दौड़े चांरू ई खूंट, पाखणियो पिलाण, रेशम गट री डोर, तंग है काठौ जोर, लड़ियो भोमी काज, राखी सबरी लाज, भौमी रो रजपूत, धरणी मां रो पूत, धन-धन रावल माल, धरणी है निहाल ए भाई ओ।

-ऐतिहासिक भणत

सामाजिक और सन्देश प्रधान भणतों में रामईयो और अमलिड़ो भणत खूब प्रचलित हैं। यथा-

रामईयो भण बोले ए भाई ओ, गणले गरबो बोले, सलियो करणो काम, राखो मडरे मान, राखो मदरे रोक, मडरे खोंधो मेल, काम करण रो मेल, दिनड़े खोची डोर, दिनड़े बंधते मोल, पड़गी बैरण रात, तारा बरली रात, काली पीला रात, चंदे छाई रात, करणो मडरे कान, करदो काम पूरो, बूढ़ो शिव रे राम ए भाई ओ। **-रामईयो**

अमलिड़ो बंधाली ए अमलीड़ो, अमलिड़ो अमल उतरे मर जावे रे, अमलिड़ो मावा बंधियो लेवे रे, अमलिड़ो खोबा भर-भर लेवे रे, डोटे भावे लेवे रे, धणो लियो मर जावे रे, जाजमड़ी बिछावे रे, बेली साथीड़ा ने पावै रे, टाबरिया रूल जावै रे, घर रो गणे बच्चों रे, अमलिड़ो बैढ़ो डेण, अमलिड़ो डोडा पिवे रे, भर-भर बुटका पिवे रे, बिना मिल्या मर जावै रे, अमल मत लिजो रे, अमल घर रूलावे रे, घर ली करे बर्बादी रे, ऐड़ो नशौ मत करजो रे, घर री राखो लाज ए अमलीड़ा।

-अमलिड़ो

धोरा रे माये ढोणी ए भाई ओ, बोंदर लावें पाणी, रूठी घर री नार रे, झगड़ो अपर पार, घोड़ी री मारी लात, बैगी सबमें घात, डोकरियो वर जोवे , लूर-लूर लवणा फांके, घोड़ी रे माथे बैठे, लौरी रो ललकार रे, खाड़ी जी वाले खेत, खेतर रौ धण, भाखर माथे बैरा, ढीरो लंगेरो ए भाई ओ। **-कौतुक प्रधान**

नई व्यवस्था में व्यक्तिवादी सोच, रिश्तों में टूटन, एकता तथा आत्मीयता के रिश्तों में दरार, सामाजिक सोच और रिश्तों पर भी धीरे-धीरे आक्रमण हो रहे हैं। इस कारण काम का आंकलन भावना से ज्यादा अर्थ में किया जा रहा है, लेकिन ग्रामीण अंचलों में आज भी ल्हास सामाजिक परम्परा और संस्कृति का चलता-फिरता स्कूल है।

खोज-खबर

सन् 1999 की उपलब्धिपूर्ण उल्लेखनीय लोकनाट्य संगोष्ठी

राजस्थान के भवाई कलाकार आज भी उतने ही कला मर्मज्ञ, हंसोड़, व्यंग्यक, हाजिर जवाबी और फन के उस्ताद हैं जो जहां मंच गाड़ते हैं वहीं अपना समस्त रंग उड़ेलकर मनोविनोद की झड़ी लगा देते हैं। घुमक्कड़ बने जैसा देश वैसा भेस, वातावरण और देशकाल की समझ लिए दर्शक और परिस्थिति को अपना विषय बनाकर अपनी उपज से ये पूरी रात विमोहित किये रहते हैं। शेखावाटी, किशनगढ़ी, चिड़ावी, जयपुरी, मारवाड़ी, मेवाड़ी ख्यालों की रंगतें हैं। नटों-बहुरूपियों के खेल-तमाशे हैं। रावलों-गंधर्वों से खले हैं। रामलीला, रासलीला, रासधारी और समया की परम्पराएं हैं। नौटंकी है। स्वांग है। अलीबक्ष के ख्याल तथा तमाशा की सदाबहार गायकी है। कठपुतली खेलों का तो यह गढ़ ही है। महिलाओं केप्रहसन हैं। गवरी आदिवासी भीलों का सर्वथा अनूठा नजारा है।

11-12 जनवरी 1999 को सुखाड़िया विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग ने भारतीय लोकनाट्य और हिन्दी नाटक पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की। उद्घाटन प्रसिद्ध नाट्य मर्मज्ञ चिरंजीत ने किया जो वर्षों तक आकाशवाणी नई दिल्ली में नाटक विभाग के चीफ प्रोड्यूसर रहे। उन्होंने नाटक तथा लोकनाटक के क्षेत्र में पूरे देश और विदेश में हो रही गति-प्रगति का अध्ययन कर अनुसंधान को व्यापक फलक दिया। देश के ख्याल नाट्यकर्मियों, लेखकों तथा लोकनाटक करने वाले ख्यात-लब्ध कलाकारों-उस्तादों से उनका परिचय रहा। उन्होंने भी कई नाटक लिखे जो विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में लगे।

चिरंजीत ने कहा कि नाट्य-शास्त्र के लेखक भरत मुनि कोई व्यक्ति नहीं होकर एक पूरा का पूरा वर्ग था जो भरत नाम से जाना जाता था और यह वर्ग विविधरूपा प्रदर्शन-प्रहसन कर ग्रामीणजनों का सशक्त मनोविनोद कर अपनी आजीविका चलाता था।

यह वर्ग घुमक्कड़ वर्ग था। इसका प्रारंभिक क्षेत्र राजस्थान, हरियाणा तथा दिल्ली रहा। राजस्थान में अपना सर्वाधिक पड़ाव देते धीरे-धीरे उसके पास के क्षेत्र को अनुरंजित करते हुए अपनी प्रदर्शनकारी कलाओं से प्रभावित किया जिससे देश के विभिन्न अंचलों में नाटक का लोकधर्मी स्वरूप विकसित हुआ।

राजस्थानी लोकनाट्यों को अपने शोध का विषय बनाकर जो कुछ देखा, समझा उस आधार पर विषय प्रवर्तन करते हुए मैंने कहा कि चिरंजीत की इस शोध निकष और उनके व्यापक गहन अध्ययन को जब मैं अपने प्रान्त की लोकनाट्य परम्परा के साथ घटित करता हूं तो मुझे बहुत सारे प्रामाणिक तथ्य हाथ लगते हैं।

राजस्थान के भवाई कलाकार आज भी उतने ही कला मर्मज्ञ, हंसोड़, व्यंग्यक, हाजिर जवाबी और फन के उस्ताद हैं जो जहां मंच गाड़ते हैं वहीं अपना समस्त रंग उड़ेलकर मनोविनोद की झड़ी लगा देते हैं। घुमक्कड़ बने जैसा देश वैसा भेस, वातावरण और देशकाल की समझ लिए दर्शक और परिस्थिति को अपना विषय बनाकर अपनी उपज से ये पूरी रात विमोहित किये रहते हैं।

राजस्थान के लोकनाटकों का खजाना खोलते हुए मैंने स्पष्ट किया कि शेखावाटी, किशनगढ़ी, चिड़ावी, जयपुरी, मारवाड़ी, मेवाड़ी ख्यालों की रंगतें हैं। नटों-बहुरूपियों के खेल-तमाशे हैं। रावलों-गंधर्वों से खले हैं। रामलीला, रासलीला, रासधारी और समया की परम्पराएं हैं। नौटंकी है। स्वांग है। अलीबक्ष के ख्याल तथा तमाशा की सदाबहार गायकी है। कठपुतली खेलों का तो यह गढ़ ही है। माच का प्रारम्भिक रूप बैठकी दंगली ख्याल और उन्नत स्वरूप तुर्रा कलंगी यहीं विकासशील हुए। यहां नाट्य के सवारी और जुलूस रूप हैं। महिलाओं के विकसित वैवाहिक मनोरंजन टूंटिया के जितने खेल-प्रहसन मिलेंगे, अन्यत्र नहीं हैं। जुरहरा की रामलीला के विविध स्थलों के बेजोड़ नाट्य मंच हैं।

पड़-कावड़ के प्रदर्शन मंच पूरे विश्व के कलामर्मज्ञों के आकर्षण बने हुए हैं। करौली महावीरजी के रामायण-महाभारत के आख्यानों को बरसाते हेला ख्यालों की स्वस्थ परम्परा है तो जयपुर-लालसोट के ख्यात आधुनिक सामाजिक राजनैतिक परिवेश को उधेड़ते करारी चोट करते बड़े लोकप्रिय हैं। गवरी आदिवासी भीलों का सर्वथा अनूठा नजारा देता है। राजस्थान की ये ही रंगोलियां देश के विविध अंचलों में विकसित और परिवर्द्धनशीन बनी हुई हैं। इसी सन्दर्भ-क्रम में हिन्दी नाटक को भी राजस्थान की देन के रूप में रेखांकित किया जाना चाहिये।

दूसरे दिन के तकनीकी सत्र में अध्यक्ष प्रो. नन्द चतुर्वेदी ने नाटकों के परिप्रेक्ष्य में मौजूदा जीवन की विभिन्न परिस्थितियों का जिक्र करते कहा कि आज हर बात किसी न किसी व्यंग्य के लहजे में कही जाती है जबकि उसमें पारम्परिक, आलंकारिक 'वक्रोक्ति' का निशान नहीं होता। लगता है सम्पूर्ण जीवन ही एक नई वक्रोक्ति होता चला आ रहा है और जिस तरह की भाषा और उसकी आहट आ रही है, वह रचनाकारों के सामने भाषा के माधुर्यपूर्ण स्वभाव को बदलने की चुनौती है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि आज लोक का स्वभाव और लोक की सत्ता विलुप्त ही होती जा रही है जिसकी ओर हम सब आशा और अमृत भरी निगाहों से देखते आए हैं। नाटकों की आवश्यकताएं और परम्पराएं पूरे वेग के साथ बदलती जा रही हैं, इसे हमें वैश्वीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति की नजर से देखना होगा। अपनी भाषा में लिखने वालों का ऐश्वर्य, वैभव और प्रतिष्ठा वह नहीं रह गई है जो अन्य, भाषाओं में लिखने वालों की है। उन्हें लिखने से पूर्व हजारों-लाखों डॉलर की रॉयल्टी मिल जाती है। यह स्थिति तीसरी दुनिया के देशों के रचनाकारों को अत्यधिक चकित और विस्मृत करने वाली है।

ऐसे में हमें यह सोचना पड़ेगा कि गरीब कलाकारों को संरक्षण मिले या नहीं? उनके सम्मान की मूल्यवत्ता क्या है? लेखन के लिए पुरस्कार लिया जाए अथवा नहीं? कलाओं को बचाना आज एक कठिनतर प्रसंग हो गया है। इसके लिए तत्काल चातुर्थिक-चातुर्दिक प्रयास की जरूरत है।

डॉ. रमाकान्त शर्मा ने मणि मधुकर के रस गंधर्व में उल्लेखित 'सुरधाणी ख्याल' का जिक्र भी किया जिस पर उपस्थित विद्वानों ने कहा कि राजस्थान में ऐसी कोई ख्याल विधा नहीं रही। संयोजन डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ ने किया।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि उज्जैन के प्रो. राममूर्ति त्रिपाठी ने भरताचार्य की लोक अवधारणा का जिक्र किया और लोक को उसके वास्तविक अर्थ में देखने की बात दोहराई। उन्होंने देश की जातीय अस्मिता, निष्ठा, सहज चेतना आदि विषयों को भी विवेचित किया और कहा कि हमें अंग्रेजी का अनुवाद नहीं होना है बल्कि अपनी बात को अपनी अभिव्यक्ति के रूप में सहजता से कहनी है।

वीणा के सम्पादक इन्दौर के डॉ. श्यामसुन्दर व्यास ने सृजनकारों को सांसों को समीधा, उनके रक्त को तर्पण और सृजन को यज्ञ बताते कहा कि जिसके पास परम्परा का पारस है वह कभी दरिद्र नहीं हो सकता। समाहार भाषण डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' ने दिया। अधिष्ठाता प्रो. प्रेमसुमन जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

गवरी में कालू कीर का प्रदर्शन

आदिवासी भीलों के अनुष्ठानिक खेल गवरी में कालू कीर का सांग बहुत प्रसिद्ध है। शोध के दौरान कई गवरी खेल देखने, पूछने के बावजूद कालू कीर के सम्बन्ध में प्रामाणिक तथ्य नहीं जान सका। यह खेल कीर जाति से सम्बन्धित है। इस जाति के लोग पानी किनारे तरबूज-खरबूज-सिंघाड़ा की खेती तथा मछली पकड़ने का व्यवसाय करते हैं।

गवरी खेल में कालू कीर की गाथा, जिसे भारत नाम से जाना जाता है, में कहा गया है कि मानसरोवर में देवी अम्बाव की अंगूठी गिर जाती है जिसे माछला निगल जाता है। फलस्वरूप उस माछले को मारकर अंगूठी प्राप्त करने का जिम्मा कालू नामक कीर को दिया जाता है। कालू तथा उसकी जोड़ायत किरण सूत्रधार जिसे कुटकड़िया कहते हैं, को कार्य के लिए अपनी असमर्थता जाहिर करते हैं। कारण बताते हैं कि हठिया राजा के राज में हमें भय लगता है। देवी यह सुन उन्हें वचन देती है कि हठिया से भय खाने की जरूरत नहीं है। कोई तुम्हारा बाल बांका नहीं करेगा। मैं सहायता के लिए हर समय तुम्हारें साथ रहूंगी। इस पर दोनों माछले को पकड़ उससे अंगूठी प्राप्त करते हैं।

सन्त साहित्य के मान्य विद्वान बजेन्द्रकुमार सिंहल ने अपने गहन अध्ययन से श्रीमद् भागवत के हवाले से बताया कि कालू सतयुग का जीव है। यह पहुंचा हुआ सन्त था। स्वयं नारदजी ने इनसे दीक्षा ली। कालू की पैदाइश राजा वेन की जांघों के मर्दन से हुई।

नाटे कद का होने से इसका नाम कालू पड़ा। भक्तमालकार कलियुग के सन्तों-भक्तों का अस्तित्व बारह सौ-तेरह सौ वर्षों का मानते हैं। कालू कीर भी माना हुआ सन्त-भक्त था। इसका काल गोरखनाथ, रामानुज, निम्बार्क जैसे सन्तों के समय का, करीब के आसपास का माना जाता है।

सिंहलजी ने बताया कि कालू कीर ने सन्त बनने के बाद जो कुछ लिखा वह जगन्नाथजी रै गुणगंजनामा तथा सबरंगी सरह चिंतामणी में उपलब्ध होता है। इन संग्रहों का संपादन काल विक्रम संवत् 1684 और इसके आसपास का है। कीर समाज के व्यक्ति कालू का जन्म भादवी बीज को मानते हैं। गवरी का खेल भी राखी, रक्षाबंधन के दूसरे दिन से प्रारंभ होकर चालीस दिन तक प्रदर्शित किया जाता है।

भक्तमाल की कथा का उल्लेख करते हुए सिंहलजी ने बताया कि बादसाही तलाव में कालू माछली पकड़ने उतरा कि बादशाह के लोगों को भनक लग गई और वे वहां पहुंच गये। उन्हें देख कालू बड़ा घबराया कि या तो उसे जेल में ठूंस देंगे या मौत के घाट उतार देंगे। इससे बचने के लिए उसने अपने शरीर पर तिलक छाप लगा, आंखें बन्द कर पानी में चुपचाप खड़ा हो गया। बादशाह के लोगों ने उसे देख जाना कि यह तो कोई पहुंचा हुआ तपस्वी दिखता है। उन्होंने तत्काल बादशाह को सारे हालात से विदित किया। इस पर बादशाह अपने लवाजमे के साथ आया और उसे मोहरें भेंट की।

इस घटना से कालू बच तो गया पर उसे मन ही मन पछतावा रहा। उसने महसूस किया कि उसकी आत्मा उसे धिक्कार रही है कि ऐसा ढौंग क्यों किया। इसी गहरे सोच ने उसे ईश भक्ति में मोड़ दिया। वह साधना में डूब गया भक्त बन गया। एक साखी में यह उल्लेख द्रष्टव्य है-

बानौ बड़गोपाल कौ, तिलक छाप गळ माळ।
काळू कहतो जम डरै, भै मानैं भोपाल।।

गुणगंजनामा में संग्रहीत कालू की दो साखियां इस प्रकार हैं-

पर्वत से नाहिं कहै, नाहीं धरणि आकास।
काळू कोई जन कहै, जाके घट परकास।।
जो दुखदाई आपको, ताकौं इहिं विधि मार।
बहुत सजा काळू कहै, दिल से देई उतार।।

- म. भा.

स्मृतियों के शिखर (89) : डॉ. महेन्द्र भानावत

एक माह मणिपुरी आदिम जातियों के संग

उदयपुर के भारतीय लोककला मण्डल की एक परियोजना के तहत वहां रहते मैंने मणिपुर की आदिम जातियों के सांस्कृतिक सर्वे के लिए एक माह की यात्रा की। यह यात्रा 20 नवम्बर से 10 दिसम्बर 1960 तक रही। इस काल में उखरुल तथा चुराचान्दपोल नामक डाकबंगले हमारे प्रवास स्थल बने। इस यात्रा में मेरे साथ खोज-विभाग के अधिकारी राजेन्द्रसिंह बारहठ तथा सुनील कोठारी थे। सुनील ने बाद में भारतीय नृत्यों के ख्यातिलब्ध अध्येता के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। हमारे खाने-पीने की व्यवस्था के लिए हमने अपने साथ एक आदिवासी सेवादार ले लिया।

मणिपुर की प्राकृतिक छटा का क्या कहना! ईश्वर की एक ऐसी अद्‌भुत देन ही कहा जाएगा, जो अन्यत्र शायद ही कहीं मिले। सदा हरे रहने वाले भालू के बालों की तरह घने जंगल, सीधे तने ऊंचे-ऊंचे गगनचुम्बी वृक्ष जैसे मिलेट्री के नौजवान हर समय लड़ने-मारने के लिए तैयार खड़े हैं और उनके बीच जाती हुई पगडंडी जैसे घने बालों के बीच मांग। चावल के पके-पकाये खेत जैसे चांदी की पतली-पतली शलाकें धरती पर आंख गड़ाये, क्षण-प्रतिक्षण दायें-बायें हिलती-डुलती अपने प्रिय मिलन की चिर प्रतीक्षा कर रही हों अथवा किसी ने बड़े-बूढ़े के पके-पकाये सुन्दर सफेद कठोर बाल बिखेर रखे हों। छोटी-छोटी बकरियां जैसे हिरण के सुडौल स्वस्थ भोले-भाले बच्चे बस्ती में आकर छलांग भर रहे हैं। पहाड़ियों पर का कुहरा जैसे किसी ने वेलवेट बिछा रखा हो अथवा पर्वतीय महलों पर पहल ही पहल उड़ेला जा रहा है।

मैदानों और विशेषकर पहाड़ियों के बीच बसी नृत्य और गीतों की धनी, संस्कृति और सभ्यता की रक्षक मणिपुर की आदिम जातियों ने पहाड़ों के गर्भ, मैदानों की ओट और वृक्षों की खोखलों में अब तक अपनी संस्कृति और सभ्यता को कायम रखा है। ये जातियां अपनी संस्कृति और सभ्यता में सुसंस्कृत एवं सुसभ्य हैं। विविध रूपों एवं रंगों की डिजाइनदार चित्ताकर्षक पोशाकों को पहन जब जवां-मर्द-औरतें नृत्य करने को उतारू होते हैं तब लगता है कहीं तो भयंकर युद्ध हो रहा है, धरती फटी जा रही है। कहीं जैसे रासरंग, कीर्तन एवं भजन हो रहे हैं। कहीं छनक-छनक छुमरियां तो कहीं रूनक-झुनक और होली की डांडियां, कहीं कण्व के आश्रम में जैसे शकुन्तला बालाएं और कहीं ग्राम गोपिकाओं के साथ नटवर नागर की क्रीड़ाएं, शान्त संगीत, नृत्य और गीत! स्नेह सुख और स्वर्ग! आनंद, उत्साह, उल्लास और आश्चर्य!!

नृत्य कुछ गोलाकार और अधिकतर चन्द्राकार होते हैं। नाचते

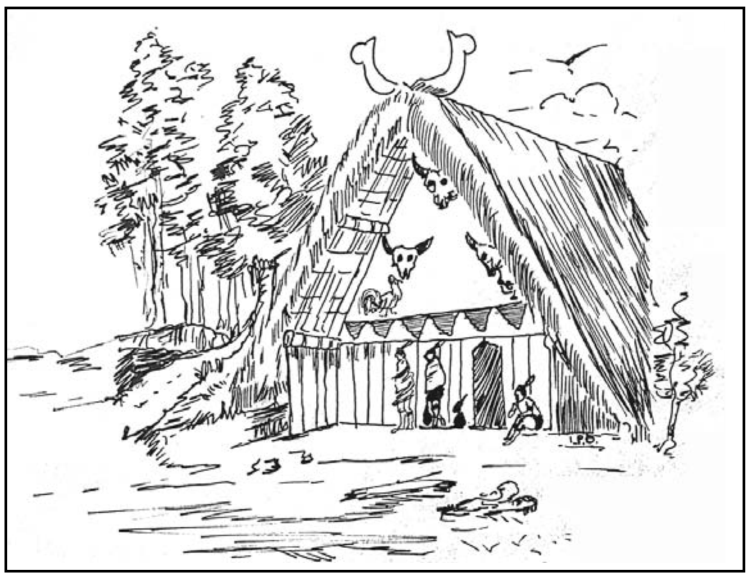

समय इनकी अलग पोशाकें होती हैं जो बहुत ही कीमती होती हैं। प्रायः सभी एक ही प्रकार की पोशाकें पहनते हैं। नृत्य के साथ वाद्यों में प्रायः झालर, ढोलक अथवा ढोलकी, बांस की बनी बांसुरी और सिरकी (सींग का बना वाद्य) ही प्रमुख होते हैं। नृत्यों के कदम अत्यन्त हल्के तथा सीमा में बन्धे होते हैं। गीतों के बोल भी अत्यन्त मंद गति लिये होते हैं इसलिए दर्शकों को इनसे कोई विशेष मनोरंजन प्राप्त नहीं होता है कारण कि इनके नृत्य दूसरों के लिए न होकर स्वयं अपने ही लिये स्वान्तःसुखाय होते हैं।

इन्हें नृत्य के लिए तैयार नहीं करना पडता बल्कि नृत्य ही स्वयं नाचने को उतारू हो जाता है। जीवन के प्रत्येक पहलू पर नाच और गान है। इनके नृत्य अपने नृत्य होते हैं। प्रत्येक नृत्य के साथ उससे सम्बन्धित गीत गूंथे हुए हैं। स्त्री-पुरुषों के अलग-अलग नृत्य नहीं के बराबर हैं। गीतों की एक लाइन मुखिया बोलता जाता है और उसी के इशारे के अनुरूप सभी नाचते-गाते रहते हैं।

मणिपुर नामकरण के सम्बन्ध में विभिन्न लोककथाएं प्रचलित हैं लेकिन सबके मूल में राधा-कृष्ण और उनके द्वारा अभिनीत रासलीला के प्रसंग ही अधिक सुनने को मिलते हैं। ऐसी प्रसिद्धि है कि एकबार इसी रंगस्थली में राधा-कृष्ण ने रास रचाया। उसे देख शिव-पार्वती इतने मोहित हो गये कि लगातार सात दिन वे भी रासलीला करते रहे। जिस रंगस्थली पर यह प्रदर्शन हुआ उसे शेषनाग द्वारा बड़े भव्य रूप में मणि-मालाओं से सज्जित कर आकर्षक रूप दिया गया। मणि-मालाओं की यह सज्जा इतनी भव्यता लिये थी कि दर्शकों ने वहीं अपना निवास बना लिया जो आगे जाकर एक पुर के रूप में दृष्टिगोचर हुआ और मणिपुर के रूप में जाना गया।

रासलीला के आयोजन देश के कई भागों में होते हैं किन्तु मणिपुर की रासलीला सबसे निराली अपना वैशिष्ट्य लिये है। इस नृत्य की ख्याति पूरे विश्व में है। रास के अलावा लाईहराओबा, थाबल चोड़बा, खूंबा थोइबी तथा जनजातियों में प्रचलित नृत्य मणिपुरी संस्कृति के उज्वल दास्तान हैं।

बसन्त से वर्षा ऋतु तक लाईहराओबा का आयोजन देवता को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। लाई का अर्थ ही देवता है। हराओबा से तात्पर्य उत्सवजनित आनन्द प्राप्ति से है। सृष्टि के उद्‌भव एवं विकास की कथा को नृत्य-

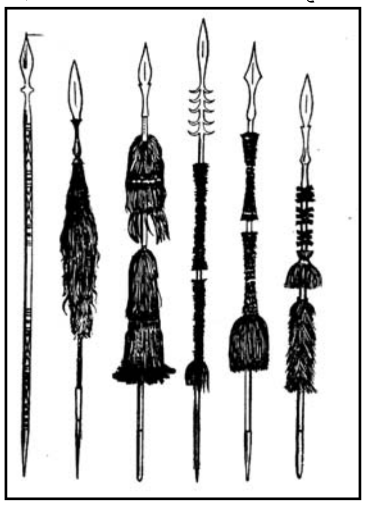

संगीत रूप में आबद्ध कर गर्भधारण से लेकर प्राणी के विकास एवं जीवन निर्वाह के लिए कृषि, बुवाई, बुनाई, गृह निर्माण, ईश आराधना जैसे प्रसंगों को बहुत ही खूबसूरती से प्रस्तुत किया जाता है। यह एकल, युगल और समूह रूप में भी किया जाता है।

थाबल चोड़बा से तात्पर्य चान्दनी रात के नृत्य से है। फाल्गुनी पूर्णिमा को युवक-युवतियां समूहबद्ध घेरे में हाथ में हाथ डाले ढोल नगाड़े की धुन पर थिरकते हैं। गीतों में सृष्टि निर्माण के प्रसंग, प्रचलित प्रेमकथाएं तथा पौराणिक कथा-प्रसंग वर्णित रहते हैं। खंबा थोइबी में खंबा और थोइबी की प्रेमकथा पिरोई मिलती है। एकतारा पर संगीत की सुहानी धुन पर मोइरांग की राजकुमारी थोइबी तथा सामन्त पुत्र खंबा के अटूट प्रेम की कथाबद्ध गीति रचना का कमाल मिलता है।

रास दो तरह के प्रचलन में है। कृष्ण अपने गोप-सखाओं के साथ गाय चराने का जो भाव व्यक्त करते हैं वह गोप रास है जबकि रासलीला में राधा गोपियों के साथ कृष्ण के दिव्य प्रेम को प्रदर्शित किया जाता है।

नागा मूलतः आदिवासी हैं। इनमें प्रमुख आओ, चांग, कोन्याक, सेमा, फोम, लोथा, अंगामी, कुकी, रेंगमा, चकेसांग, पोचुरी, यिमचुंगवार हैं। मणिपुरी समाज नारी का प्राधान्य लिये है। महिलाएं ही सारा व्यापार तथा कारोबार करती हैं। ऐसे बाजार जगह-जगह मिल जायेंगे जहां महिलाएं ही मिलेंगी। ये बाजार इमा बाजार अर्थात् महिला बाजार के नाम से जाने जाते हैं।

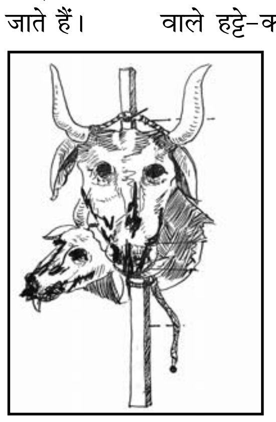

यहां के लोग बहुत भोले-भाले, अंगूर अथवा आगरे के पेठें जैसे भीतर-बाहर से एक सरीखे होते हैं। इन्हें न किसी से लेना होता है न किसी को देना। न इन्हें डाक्टर की जरूरत पड़ती है, न खाने-पीने अथवा काम-कमाई की चिंता ही रहती है। स्वयं ही डाक्टर, नाई और धोबी, स्वयं ही किसान, शिकारी, बुनकर तथा स्वयं ही मालिक, मजदूर और खाती।

अतिथि सत्कार में ये लोग बड़े प्रवीण होते हैं। प्रत्येक के साथ बहुत जल्दी घुलमिल जाना, उनके दुख में दुख महसूस करना, उनकी हर तरह से देखभाल करना ये खूब जानते हैं। बड़े-बूढ़े सलाम-सलाम कर झुक जाते हैं। छोटे-छोटे बालक-बालिकाएं फूलों की मालाएं पहनाकर झुक जाती हैं। वे झुकते कि हमारे हृदय और मस्तिष्क एक साथ झुक जाते। कितना अतिथि सत्कार! लगता है प्राचीन भारत की अतिथि सत्कार की कथा-कहानियां जैसे लुप्त होते-होते यहां आकर अटक गई और आज भी अपनी प्राचीनता लिये अपने शेषपन पर अभिमान कर रही हैं।

जाते समय, उनसे मिलते समय, स्वागत गीतों की बहारें, हर्ष में आंसू और विदा होते समय 'गुडबाई ब्रदर, गुडबाई ब्रदरा; केवल दो घण्टे का मिलन जैसे जन्म भर से साथ रहते आये हैं और आज अचानक बिछुड़ रहे हैं। उन्हें विश्वास है कि हमारा फिर से मिलना होगा। यदि यहां नहीं मिल सके तो स्वर्ग में तो मिलेंगे ही मिलेंगे। वे हमें पानी की बजाय राईस बीयर पिलाते। स्वागत के लिये नाचते-गाते। अच्छा खिलाते-पिलाते परन्तु फिर भी बार-बार ये ही शब्द उनके मुंह से निकला करते कि हम आपका अच्छा स्वागत नहीं कर पा रहे हैं। ये ही सच्चे अर्थों में मेहमानदारी करने वाले लगे। हम उनसे जो भी प्रश्न पूछते वे बड़े धैर्य, शान्ति तथा दिलचस्पी के साथ उनका उत्तर देते।

लकड़ी के पाटियों के बने एक मंजिल के अत्यन्त साफ-सुथरे मकान और लकड़ी के दरवाजों पर जानवरों के नाक, सींग, नरमुण्ड तथा गायों के पिछले पांवों की शक्ल के उभरांकन। मकानों की दीवालों पर जैसे अपने इधर हाथी घोड़े और संतरी चित्रित किये जाते हैं, उसी प्रकार उनके वहां लम्बे-लम्बे सींग वाले हट्टे-कट्टे जानवरों के मुंह टंगे रहते हैं और घरों में भी तस्वीरों और बान्दरवारी की जगह छोटे-बड़े जानवरों के सिर ही सिर लटके, टंगे मिलेंगे। ये ही चीजें इनकी श्री-सम्पन्नता तथा गौरव की प्रतीक मानी जाती हैं। मकानों के बाहर चार-चार, पांच-पांच शाखाओं वाले ठूंठ रोपे रखे होते हैं। ऐसा कहते हैं कि जो व्यक्ति जितने जानवर एक साथ मारकर दावत रूप में समाज को खिलाता है वह उतनी ही शाखा वाला वृक्ष जंगल से लाकर अपने घर के बाहर रोपता है। जिस आदमी के बाहर ज्यादा वृक्ष होते हैं वह उतना ही धनी तथा इज्जतदार समझा जाता है।

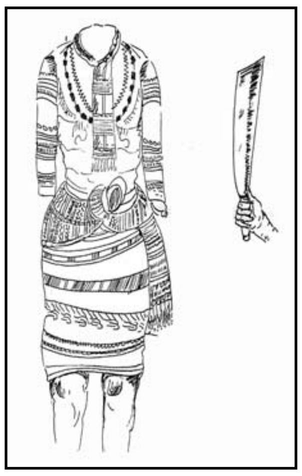

इधर चावल के साथ-साथ मकई भी बहुत पैदा होती है परन्तु मकई को ये लोग खाते नहीं हैं, बल्कि जलाते हैं तथा सुअरों को खिलाते हैं। छिलके सहित भुट्टे घरों में औंधे लटके रहते हैं जैसे वृक्ष की शाखाओं से चिमगादड़ लटके हों अथवा कि बया पक्षी के घोंसले लटक रहे हों। लड़के मांस के लौंदों के साथ खेलते-कूदते और मनोरंजन करते हैं। घरों में सुअर, मुर्गे-मुर्गी तथा कुत्ते पाले जाते हैं। ये लोग गाय, भैंसा, हिरन, कुत्ता, सुअर, सांप तथा मुर्गे-मुर्गी मार कर खाते हैं। इनके हर त्यौहार, उत्सव तथा मांगलिक पर्व पर जानवरों की बलि होती है।

-शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 15 दिसंबर 2019

सम्पादकीय

गवरी का संरक्षण

यह अच्छी खबर है कि गवरी कलाकारों को संरक्षण देने के लिए सांसद अर्जुनलाल मीणा ने लोकसभा में शून्यकाल के दौरान संस्कृति मंत्रालय की कलाकार पेंशन कल्याण निधि योजना से जोड़ने का प्रस्ताव दिया।

गवरी राजस्थान के उदयपुर सम्भाग से जुड़े आदिवासी भीलों में प्रचलित आदिम नृत्यानुष्ठान है। यह महादेव शिव और उनकी सहधर्मिणी पार्वती, गौरी को समर्पित है। प्रतिवर्ष तो नहीं किन्तु पहले हर तीसरे वर्ष देवी गवरजा, गौरजा का आशिष पाकर आदिवासी भील का प्रत्येक गांव गवरी का आयोजन कर खुशहाल होता।

रक्षाबन्धन के ठीक दूसरे दिन ठण्डी राखी से चालीस दिन तक, आदिवासी गांव-दर-गांव, प्रतिदिन इसका प्रदर्शन सुबह से शाम तक होता आ रहा है। इसे देखने पर लगता है, सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्य ने अपना समाज बनाकर भय मुक्ति के लिए देवता की आराधना शुरू कर नृत्य ही को मुख्य आधार बनाया और बाद में उस देव को, मानव के निष्ठापूर्वक आह्वान द्वारा, मृत्युलोक में प्रकट हो भक्तों की काया में प्रवेश कर दरसन देना पड़ा।

आदिदेव शिव की छाया के रूप में उसका काष्ठ निर्मित चेहरा गवरी नायक अपने चेहरे पर धारण कर खेल में उसकी उपस्थिति बनाये रखता है। थाली और मांदल वाद्यों के सहारे गवरी में जो गाथा-गीत गाये जाते हैं वे भारत नाम से जाने जाते हैं।

इनमें सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर उसके क्रमिक विकास, पाताल लोक से धरती पर प्रथम वृक्ष को लाकर पर्यावरणीय चेतना विकसित करना, अदृश्य शक्तियों का सहयोग, समाज का निर्माण, अनुरंजन के लिए नाना बहलाव के स्वांग तथा देव शक्तियों के लीला रूपों के दिव्य दर्शनपरक ख्याल तमाशों के प्रदर्शन, प्रहसन देख अचरज ही होता है कि कब कैसे कितने वर्षों में ऐसा प्रदर्शनधर्मी रूपक बना और बिना किसी शिक्षण, प्रशिक्षण, प्रयोगधर्मी पाठशाला के आदिवासी कलाकारों में ऐसी कला का करतब कौशल आ समाया; लगता नहीं कि विश्व के अन्य समुदायों में इस खूबी का ऐसा होनहार अनमोल प्रदर्शक कहीं होता है।

लोकसंस्कृति का कोई पक्ष हो, उसका संरक्षण लोक-भावना से सराबौर लोक-समाज ही कर सकता है। सरकार की समझ और भरोसे पर यदि चला होता तो आजादी के बाद ही गिरवा मण्डल के चौखले के सरपंचों की ओर से वह छपा हुआ परचा नहीं निकलता जिसमें स्पष्ट लिखा गया कि कोई भी आदिवासी गवरी नहीं लेगा। यह हमारे पिछड़ेपन की निशानी है। यदि विकास करना है तो गवरी को बन्द करना होगा। जो कोई गवरी लेगा उस पर जुर्माना लगाया जाकर उसे समाज-जाति से बाहर कर दिया जाएगा।

भारतीय लोककला मण्डल में रहते डॉ. महेन्द्र भानावत के हाथ जब यह परचा आया तो उन्होंने गवरी को ही अपनी शोध का विषय बनाने का संकल्प लेकर उदयपुर विश्वविद्यालय से सन् 1967 में पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

कई विद्वानों ने उन्हें यह विषय लेने पर निराश किया। मौखिकी में तो उन्हें यह भी सुनने को मिला कि यह विषय तो निबन्ध का भी नहीं बनता है लेकिन वे जरा भी निराश नहीं हुए। उसके बाद लगातार और आज भी वे अपने कार्य में लगे हुए हैं। उनका शोधप्रबन्ध तथा गवरी पर लिखे अनेक लेख, परचे तथा पानड़े प्रकाशित हो चुके हैं।

डॉ. लुहाड़िया को डॉ. एसएन त्रिपाठी प्रेसिडेंशियल अवार्ड

गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के वक्ष एवं क्षय विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस. के. लुहाड़िया को कोच्चि में में आयोजित वक्ष रोग

चिकित्सकों के 21 वें राष्ट्रीय सम्मेलन 'नेपकोन-2019' में केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान द्वारा डॉ. एसएन त्रिपाठी प्रेसिडेंशियल अवार्ड से सम्मानित किया गया। सम्मेलन में देश-विदेश के 3800 से भी अधिक विशेषज्ञों ने भाग लिया।

पोथीखाना

केसरीकांत शर्मा के व्यक्तित्व-कृतित्व पर उम्दा प्रकाशन

साहित्यकार निरन्तर सृजनरत रहता है। उसका साहित्य सृजन अथक, साधनामूलक और बिना किसी चाह उम्मीद के घड़ी के कांटों की तरह गतिशील बना रहता है, वैसे ही जैसे मधुमक्खी शहद तैयार करती है। चींटी सक्रिय रहती है और प्रकृति कभी विश्राम नहीं लेती।

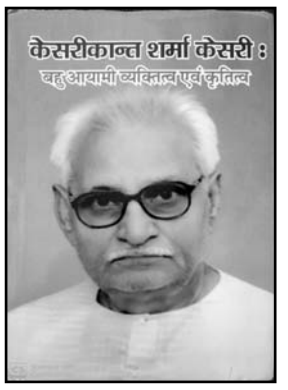

साहित्यकार सदैव ही शिष्ट-विशिष्ट होता है। वह कभी भूतपूर्व होकर सदैव अभूतपूर्व बना रहता है किन्तु हमारे यहां सदैव ही अति विशिष्ट कहे जाने वालों पर ही अभिनन्दन ग्रन्थ निकले हैं। यह परम प्रसन्नता है कि अब यह कंचुका उतरा है और साहित्यकारों पर अभिनन्दन ग्रन्थ निकाले जाने का सिलसिला शुरू हुआ है।

इसी क्रम में शेखावाटी के मण्डावा निवासी केसरीकान्त शर्मा 'केसरी' के 79 वर्ष पूर्ण करने पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है। केसरीजी की लिखी राजस्थानी में 10 तथा हिन्दी में 9 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं किन्तु उनके अनुसार उनके पास ऐसी कई फाइलें ठसाठस भरी हुई हैं जिनमें गद्य रचनाएं अधिक हैं। पद्य तो उन्होंने मौज में लिखा है। छन्द अनुशासन और अभ्यास की मांग करता है। इसके लिए समय की दिक्कत और साधन कठिन है इसलिए दोहा, सोरठा, कुण्डली और हाइकु में अपनी भावाभिव्यक्ति का उपयोग किया है। कविता उनका पेशा नहीं है। वे मंच पर नाचने वाले लौंडे नहीं हैं और पेट से नहीं, दिल और दिमाग से लिखते हैं।

ग्रन्थ के सम्पादक हरिराम शर्मा 'हरि' द्वारा लिये गये एक साक्षात्कार में केसरीजी ने अनेक बातों पर सटीक और बेबाक जवाब दिया है। वे निर्भीकतापूर्वक कहते हैं- 'पूरा विश्व विचारहीन हो रहा है। सिद्धान्त, आदर्श, नैतिकता, मानवीय मूल्यों का भट्टा बैठ रहा है। व्यक्तिवाद, स्वार्थ, चार सौ बीसी, ठगी, लूट खसोट; जीवन का कोई क्षेत्र नहीं बचा जहां कैंसर न हो। मंचीय कविता का अश्लील, फूहड़ और गिरता स्तर कविता नहीं, कपिता पेश करता है।

ऐसे में नवोदित रचनाकारों को छपास और सिपास से बचते हुए अपनी रचना पर बार-बार परिश्रम कर परिष्कार करना चाहिये।'

पृष्ठ-308 से 10)

केसरीजी राजस्थानी के अलावा हिन्दी, अंग्रेजी, बंगाली के अच्छे जानकार हैं। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में लिखा है। सम्पादन, फीचर राइटिंग, स्तम्भ तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उनकी लेखनी ने पहचान दी है। ग्रन्थ में उनके बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व को लेकर विभिन्न कोणों से साठ से अधिक लोगों ने लिखा है।

फ्लैप पर जगदीश 'विदेह' का यह कथन उल्लेखनीय है- 'केसरीजी की रचनाओं में गेंदे जैसा गुदाज, कहीं यूलिप जैसा स्वप्निल पनीलापन, कहीं गुलाब जैसा रूमानी अन्दाज और कहीं व्यंग्य के रूप में केक्टस जैसा दंश का दायरा।

इनके बीच सम्प्रेषण व संग्राहक तत्वों का पता तो पाठक को तब लगेगा जब वह इनके साहित्य पारावार में गोते मारेगा।' डॉ. प्रतापसिंह राठौड़ ने लिखा- 'केसरीजी रो कर्म क्षेत्र कोलकाता अर गुवाहाटी रैयो। राजस्थानी रा चावा नैं ठावा साहित्यकार केसरीजी प्रचार-प्रसार री दुनियां सूं दूर रैवणियां स्वान्त: सुखाय लिखा रा मनमौजी जीव है।' लगभग सवा तीन सौ पृष्ठों का यह ग्रन्थ सनातन प्रकाशन, 1223 / 25 अजायबघर का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302001 से प्रकाशित होकर पांच सौ रूपया मोल लिए है।

-डॉ. कहानी भानावत

मेड़ता अंचल के लोकगीतों का प्रतिनिधि संकलन

राजस्थान का मेड़ता अंचल मेड़ताटी बोली वाला अंचल है जो मेड़तिया राठौड़ के मूल पुरुष राव दूदा के कारण प्रसिद्धि लिये है। दूदा मेड़तिया वंश के संस्थापक रहे। यहीं वीरवर जयमल और भक्त कवयित्री मीरां ने जन्म लिया था। मीरां को मेड़तणी मीरां इसीलिए कहा गया। मेड़ताटी बोली मारवाड़ी बोली की उप बोली है। मेड़ता अंचल के प्रमुख ठिकानों में मेड़ता कस्बा, अणदपुरा, मोकला, कलरो, राहण, मोडरा, अलतवा, डेगाना तथा रीयां नामक नौ ठिकाने रहे।

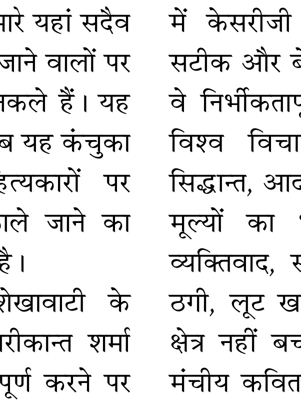

प्रस्तुत 'मेड़ता अंचल के लोकगीत' पुस्तक के सम्पादक डॉ. महीपालसिंह राठौड़ उसी अंचल के नागौर जिले के चुई गांव के मूल निवासी हैं। इसलिए वहां की भौगोलिक, राजनैतिक, सामाजिक तथा लोकधर्मी परम्पराओं से वे भली प्रकार सुपरिचित हैं।

पुस्तक के प्रारम्भ में अपने प्राक्कथन में वे लिखते भी हैं- ''यहां की बोली में विशेष मिठास है। बचपन से ही मेरा लोकगीतों के प्रति रूझान रहा। हमारा पैतृक गांव इसी अंचल का है। जोधपुर में आने पर भी अपनी माटी से जुड़ाव रहा। प्रस्तुत पुस्तक में जन्म से लेकर मृत्यु तक के गीतों को रिकार्ड कर लिपिबद्ध किया गया तत्पश्चात हिन्दी अनुवाद व विशिष्ट सांस्कृतिक शब्दों की व्याख्या की गई है। इन गीतों की तुलनात्मकता को लेकर यजुर्वेद, अभिज्ञान शाकुन्तलम्, सन्देश रासक, पदमावत, रामचरित मानस, ढोलामारू रा दूहा, मीरां पदावली, भोजपुरी लोकगीत तथा अंग्रेजी के श्रेष्ठ कवियों द्वारा प्रयोग किये गये समानार्थी शब्द व भाव साम्यता के उदहरणों को यथास्थान प्रस्तुत किया गया है।'' पुस्तक के प्रारम्भ में मेड़ता अंचल के लोकगीतों का भाव सौंदर्य शीर्षक से विस्तार से लिखा गया है। उसके बाद विविध विषयों के गीत उनके हिन्दी अनुवाद के साथ दिये गये हैं। पुस्तक के फ्लैप पर डॉ. सत्यनारायण का यह कथन उल्लेखनीय है। वे लिखते हैं-''डॉ. राठौड़ ने लम्बे समय तक सुदूर इलाकों में जाकर गीतों को रिकार्ड कर लिपिबद्ध करने का बहुत महत्वपूर्ण श्रम किया है। विभिन्न आयु वर्ग की महिलाओं द्वारा विभिन्न अवसरों पर एकत्र होकर बास गुवाड़ी में गाये जाने वाले इन गीतों की विशेषता यह है कि शोधार्थी ने इनके मूल स्वरूप को सुरक्षित रखने के साथ इनका हिन्दी अनुवाद भी किया है। इन गीतों में पशुपालन, खान-पान, देवी-देवता, व्रत व त्यौहार, राष्ट्रीयता आदि की अभिव्यक्ति हुई है। यह शोध कार्य विलुप्त होते जा रहे गीतों को संरक्षित करने की दिशा में एक सार्थक हस्तक्षेप है।''

कुल पौने छह सौ पृष्ठों की वृहदकाय सजिल्द इस पुस्तक का प्रकाशन राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर ने किया है। इसका मूल्य 900 रूपया है। स्वाभाविक है, यह कीमती पुस्तक आम पाठकों के लिए नहीं होकर पुस्तकालयों तथा विशिष्ट रूप से संग्रह स्थलों के लिए है जिसकी उपयोगिता असंदिग्ध कही जा सकती है। ऐसे गीत भी कम नहीं हैं जो उसी भाव भूमि में राजस्थान के अन्य अंचलों में भी प्रसिद्धि लिये हैं। इससे लोकगीतों की लोकप्रियता तथा जनभावना के समानधर्मी सोच का पता चलता है।

-डॉ. तुक्तक भानावत

जार की दो वर्षीय कार्यकारिणी

डॉ. तुक्तक भानावत

अध्यक्ष

जगदीश विजयवर्गीय

संरक्षक

पवन खाब्या

संरक्षक

सुमित गोयल

सलाहकार

शैलेष व्यास

सलाहकार

संजय खाब्या

सलाहकार

प्रकाश शर्मा

सलाहकार

विष्णुशर्मा हितैषी

सलाहकार

सनत जोशी

सलाहकार

पंकजकुमार शर्मा

सलाहकार

डॉ. रवि शर्मा

सलाहकार

विपिन गांधी

सलाहकार

मांगीलाल जैन

उपाध्यक्ष

भूपेंद्रकुमार चौबीसा

उपाध्यक्ष

अजयकुमार आचार्य

महासचिव

अल्पेश लोढ़ा

कोषाध्यक्ष

विकास बोकड़िया

संगठन सचिव

राजेन्द्र पालीवाल

प्रचार सचिव

भूपेश दाधीच

सदस्य

राजेन्द्र हिलोरिया

सदस्य

रामसिंह चंदाणा

सदस्य

प्रकाश मेघवाल

सदस्य

अनिल जैन

सदस्य

जोधाराम देवासी

सदस्य

जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के उदयपुर में सम्पन्न हुए चुनाव में दो वर्षीय कार्यकारिणी की घोषणा इसके अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा की गई। कार्यकारिणी में महासचिव अजयकुमार आचार्य, उपाध्यक्ष मंगीलाल जैन एवं भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, कोषाध्यक्ष अल्पेश लोढ़ा, संगठन सचिव विकास बोकड़िया, प्रचार सचिव राजेन्द्र पालीवाल, कार्यकारिणी सदस्य भूपेश दाधीच, राजेन्द्र हिलोरिया, रामसिंह चंदाणा, प्रकाश मेघवाल, अनिल जैन, जोधाराम देवासी को मनोनीत किया है। संरक्षक सदस्य जगदीश विजयवर्गीय और पवन खाब्या जबकि सलाहकार सुमित गोयल, शैलेष व्यास, संजय खाब्या, प्रकाश शर्मा, विष्णु शर्मा 'हितैषी', सनत जोशी, पंकजकुमार शर्मा, डॉ. रवि शर्मा एवं विपिन गांधी हैं। कुल 24 सदस्यों की यह कार्यकारिणी इस प्रकार है-

धूर्त जमींदार और तिकड़ी

-सीताराम गुप्ता-

ज़मींदार साहब शाम को यूं ही ज़रा टहलते हुए अपने खेतों की तरफ निकल गए। अपने एक गन्ने के खेत के पास से गुज़र रहे थे कि खेत में से कुछ खुसर-पुसर की आवाज़ सुनाई पड़ी। देखा कि कुछ आदमी खेत के अंदर घुसे हुए थे।

उन्होंने कड़ककर पूछा कि खेत के अंदर कौन घुसा हुआ है? पास जाकर देखा तो पाया कि गाँव के ही चार आदमी थे। उन चारों में एक थे गांव के लालाजी, एक पंडितजी, एक रामू धोबी और एक दीनू कुम्हार। उनको देखकर ज़मींदार साहब का खून खौल उठा।

इन पिल्लों की ये मजाल कि हमारे खेत में घुसें। ज़मींदार साहब थे तो हट्टे-कट्टे पर वो चारों भी कम नहीं थे। चारों से एक साथ भिड़ने का साहस ज़मींदार साहब न जुटा पाए लेकिन उनको ऐसे ही छोड़ देना भी उनको गवारा न था। ज़मींदार साहब थे भी परले दर्जे के धूर्त और मक्कार। लोगों को मारना-पीटना और उनका खून चूसना उनका खानदानी शौक और पेशा था।

ज़मींदार साहब ने अपने मन में एक-एक से निपटने की योजना बना डाली। उन्होंने लालाजी, पंडितजी और रामू धोबी की ओर आदर से देखते हुए कहा, 'लालाजी तो हमारे अपने हैं। इनसे हम घर का ज़रूरी सामान लेते हैं। पंडितजी पूजा-पाठ और अनुष्ठान करवाते हैं। रामू धोबी हमारे कपड़े धोता और प्रेस करता है।' फिर दीनू कुम्हार की ओर मुखातिब होकर पूछा, 'भई ये तीनों तो हमारे अपने हैं इसलिए जब चाहें हमारे खेतों में आ-जा सकते हैं लेकिन तुम हमारे खेत में क्यों घुसे? तुमने गन्ने क्यों तोड़े?' इतना कह कर बिना उसकी बात सुने लगे उसकी धुनाई करने। दीनू ने लालाजी, पंडितजी और रामू धोबी से ज़मींदार की पिटाई से बचाने की गुहार लगाई पर तीनों ने मुँह फेर लिया। ज़मींदार की चालाकी काम कर गई थी। लालाजी, पंडितजी और रामू धोबी तानों खुश थे कि ज़मींदार साहब उन्हें अपना मानते हैं।

दीनू कुम्हार की पिटाई करने के बाद ज़मींदार साहब शेष तीनों की तरफ मुखातिब हुए और बोले, 'देखो भाई लालाजी और पंडितजी तो सचमुच हमारे बड़े काम आते हैं। रामू धोबी तुम भी हमारे कपड़े धोते और प्रेस करते हो पर क्या इसके लिए पैसे नहीं लेते हो? फिर बिना बात तुमने हमारे खेत में घुसने और गन्ने तोड़ने की जुर्रत कैसे की?' ये कहकर ज़मींदार साहब ने रामू धोबी की भी अच्छे से धुलाई कर डाली। रामू ने भी लालाजी और पंडितजी से बचाने की गुहार लगाई पर दोनों ने ही उसे अनसुना कर दिया। दोनों खुश थे कि ज़मींदार साहब उन्हें तो अपना मानते ही हैं फिर रामू धोबी जैसे छोटे आदमी के लिए क्यों ज़मींदार साहब से झगड़ा मोल लिया जाए?

रामू धोबी की अच्छे से पिटाई करने के बाद ज़मींदार ने लालाजी और पंडितजी की ओर देखा। कहने लगे, 'लालाजी से तो हमारा सौ तरह का लेन-देन चलता है लेकिन पंडितजी तुम किस मर्ज़ की दवा हो? कभी-कभार पूजा-पाठ करते भी हो तो क्या दान-दक्षिणा नहीं लेते? जब पूजा-पाठ के बदले दान-दक्षिणा ले लेते हो तो खेत में घुसकर तुम्हें गन्ने चोरी करते शर्म नहीं आई? तुम रामू धोबी और दीनू कुम्हार से किसी भी तरह कम गुनहगार नहीं हो।' इतना कहने के बाद ज़मींदार साहब ने पंडितजी की भी लात और घूँसों से खूब खबर ली। पंडितजी मदद के लिए चिल्लाते ही रह गए लेकिन लालाजी उनकी मदद के लिए आगे नहीं आए।

पंडितजी की लात-घूँसों से खबर लेने के बाद ज़मींदार साहब लालाजी की ओर मुड़े। लालाजी अब तक ज़मींदार साहब की चाल समझ चुके थे पर अब किया ही क्या जा सकता था। ज़मींदार साहब ने लालाजी से कहा, 'लाला तुम हमें मुफ़्त में माल नहीं देते हो जो हमारे खेत से गन्ने तोड़ने आ गए।' 'मैं गन्ने तोड़ने नहीं बल्कि....,' लालाजी ने अपनी सफाई में कुछ कहना चाहा पर ज़मींदार ने उसकी एक न सुनी और लालाजी की भी धुनाई शुरू कर दी।

अब मदद के लिए चिल्लाने की बारी लालाजी की थी। लालाजी ने पहले पंडितजी को पुकारा और फिर रामू धोबी और दीनू कुम्हार को लेकिन कोई भी उसकी मदद के लिए नहीं आया। आते भी क्यों। जब हम किसी की मदद नहीं करेंगे तो हमारी मदद कौन करेगा। वैसे भी शोषण से बचने के लिए हमें शोषक की चिकनी-चुपड़ी बातों में न आकर शोषित का साथ देना चाहिये। जब तक हम शोषक के खिलाफ़ एकजुट होकर नहीं लड़ेंगे हम जीत नहीं सकते।

लालटेण री ठौड़ बीजळी

वौ जमानो गयौ
जद सेठ
सूंठ री जग्या
बही में नावै मांडता हा ऊंट
अर खाते पै लगवावता हा
भरपाई रौ मींगणो छाप अंगूठौ!
अबै गांव-गांव अर ढाणी-ढाणी
पूगगी है लालटेण री ठौड़
पळापळ करती बीजळी
च्यारूं कानी फैल रह्यो है
सिक्का रौ उजास
अणभण्या भण रह्या है
अधखड़ / बूढ़ा गुवाड़ी में
कोई नीं रै वै अंगूठा छाप
इण कारण ठौड़-ठौड़ चलै
प्रोढ़ सिक्सा री पोसाळ
तौ आवौ आपांई निभावां
मिनखपणै रौ मान
करौ प्रोढ़ सिक्सा रौ परचार
घणां नीं तौ
दो च्यार नै तौ करां त्यार।

-स्वामी खुशालनाथ 'धीर'-

नई जगुआर एक्सई लॉन्च

उदयपुर। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने नई जगुआर एक्सई के लॉन्च की घोषणा की है। एस और एसई डेरिवेटिव में उपलब्ध,नई जगुआर एक्सई 184 केडब्ल्यू इंजेनियम टर्बोचार्ज्ड पेट्रोल पॉवरट्रेन और 132 केडब्ल्यू इंजेनियम टर्बोचार्ज्ड डीजल पॉवरट्रेन विकल्पों में पेश की गई है।

जगुआर लैंड रोवर इंडिया लि. के प्रेसिडेन्ट एवं प्रबंध निदेशक रोहित सूरी ने कहा कि जगुआर एक्सई हमेशा से अलग डिजाइन वाला एक्जीक्यूटिव स्पोर्ट्स सैलून रही है, जिसका प्रदर्शन बेजोड़ है। नई जगुआर एक्सई दर्शाती है कि डिजाइन, प्रौद्योगिकी और ड्राइविंग की गतिकी के विस्तार से नियम कैसे बदलते हैं। हमें विश्वास है कि जगुआर के प्रशंसकों और ग्राहकों को हमारी नई पेशकश अच्छी लगेगी। नई जगुआर एक्सई बड़े फ्रंट अपर्चर, बोल्ड ग्राफिक्स और मस्कुलर फ़ॉर्म्स के साथ चौड़ी और पहले की तुलना में निचली दिखती है, यह सब कार की परफॉर्मेंस और आधुनिक एयरोडायनैमिक्स को और बेहतर बनाते हैं। आकर्षक 'जे' ब्लेड के डेटाइम रनिंग लाइट सिग्नेचर और एनिमेटेड दिशात्मक संकेतक के साथ नए ऑल-एलईडी हेडलाइट्स एक अधिक उद्देश्यपूर्ण लुक बनाते हैं। कार के पिछले हिस्से में एक नया बम्पर डिज़ाइन और अपडेट किए गए सिग्नेचर ग्राफिक्स के साथ ऑल-एलईडी टेल-लाइट्स भी हैं, जो कार की चौड़ाई को बढ़ाते हैं।

सहारा वॉरियर्स बना चैम्पियनशिप

उदयपुर। सहारा वॉरियर्स ने लगातार दूसरे साल आई.पी.ए. नेशनल ओपन चैम्पियनशिप 2019 में जीत हासिल की है। यह जीत सहारा वॉरियर्स ने जिंदल पैंथर्स के खिलाफ फाइनल मैच में दर्ज की। सहारा इंडिया परिवार के प्रसिद्ध 'लोगो' के रंगों से सजी जर्सी पहने हुए टीम ने एक रोमांचक मुक़ाबले में बेहतरीन प्रदर्शन किया। टीम के खिलाड़ी -क्रिस मैकेंज़ी, सिद्धांत शर्मा, अंगद कलाश और सतिंदर गारचा ने टीम के ध्वज की ऊंची उड़ान को सुनिश्चित किया। टीम को यह ट्रॉफी कश्मीर के युवराज विक्रमादित्यसिंह द्वारा प्रदान की गई। सहारा वॉरियर्स के लिए यह सीज़न शानदार रहा है, उन्होंने जयपुर और दिल्ली में इंडियन पोलो एसोसिएशन सीज़न के चार बड़े टूर्नामेंट जीते हैं। इससे पहले टीम ने जयपुर और दिल्ली में आर.पी.सी. कप जयपुर, जनरल अमरसिंह कनोता कप और महाराजा हरिसिंह कप भी जीता है।

पारस हैल्थ केयर ने उदयपुर में रखा स्वास्थ्य सेवाओं में कदम

उदयपुर। स्वास्थ्य सेवाओं के अग्रणी संगठन पारस हेल्थकेयर ने उदयपुर और आसपास के क्षेत्रों को उच्चतम स्वास्थ्य सेवायें प्रदान करने के उद्देश्य से उदयपुर में 200 बेड के अस्पताल का सर्जरी के साथ साथ सभी आधुनिक चिकित्सा सुविधायें उपलब्ध है।

डायरेक्टर बिजनिस स्ट्रेटिजी एण्ड इन्टेलिजेंस डॉ. कपिल गर्ग ने बताया कि ग्रुप की शुरुआत डॉ.

शुभारम्भ किया।

इस अवसर डॉ. धर्मिन्दर नागर ग्रुप एम. डी. पारस हैल्थ केयर ने बताया कि हमने अस्पताल का शुभारम्भ सभी को उच्च गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवायें उचित दाम पर उपलब्ध करवाने के लिए किया है। उल्लेखनीय है की यह उदयपुर, चित्तौड़गढ़, डूगरपुर, बांसवाड़ा, राजसमंद, मध्यप्रदेश व गुजरात के आसपास के क्षेत्रों को स्वास्थ्य सेवायें उपलब्ध करवायेगा।

ग्रुप सीईओ डॉ. शंकर नारंग ने बताया कि पारस जे. के. अस्पताल उदयपुर में 200 बेड की क्षमता है जो की एक उन्नत कैथ लैब, एमआरआई, सीटी, मॉड्यूलर ओटी, डायलिसिस और 60 आईसीयू बेड से सुसज्जित है। यह एक मल्टी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल है जिसमें इन्टरनल मेडिसिन, कार्डियोलॉजी, कार्डियक सर्जरी, न्यूरोसर्जरी, न्यूरोलॉजी, गैस्ट्रोएंटरोलॉजी, नेफ्रोलॉजी, आर्थोपेडिक, यूरोलॉजी और न्यूनतम इनवेसिव धर्मिन्दर नागर द्वारा गुड़गांव में पहले आधुनिक व उच्चतम चिकित्सालय के रूप में की गई। ग्रुप के वर्तमान में गुड़गांव, पटना, दरभंगा, पंचकुला, रांची, उदयपुर में कुल 8 अस्पताल है। वर्तमान में ग्रुप की क्षमता 1000 बैड की है जिसको कि 2023 तक 2000 बैड्स करने का लक्ष्य रखा है। ग्रुप का राजस्थान में यह पहला अस्पताल है।

उदयपुर हॉस्पिटल के डायरेक्टर विश्वजीत ने बताया कि यह अस्पताल फोर्टिस जे. के. हास्पिटल से अधिग्रहित किया गया है। अस्पताल में सभी आधुनिक चिकित्सा सुविधायें व अनुभवी टीम है। आधुनिक क्रिटिकल केयर एवं आपातकालीन विभाग में सभी प्रकार की जटिल बीमारियों, हृदय, मस्तिष्क, ट्रोमा, स्ट्रोक, पेट एवं आंत रोग के साथ साथ हड्डी एवं जोड प्रत्यारोपण, कार्डियक सर्जरी, न्यूरोसर्जरी, जनरल एवं लेप्रोस्कोपीक सर्जरी के उच्चतम उपचार की सुविधायें हैं।

मैनकाइंड फार्मा ने बांझपन और गर्भावस्था से जुड़ी दवा बनाई

उदयपुर। मैनकाइंड फार्मा, 5,600 करोड़ रुपये की फार्मास्युटिकल कंपनी, ने गर्भावस्था से जुड़ी जटिलताओं के इलाज के लिए डाइड्रोजेस्टेकरॉन से युक्त एक दवा लॉन्च की है। मैनकाइंड फार्मा यह दवा विकसित करने और इसे सस्ती कीमत पर उपलब्ध कराने वाली पहली भारतीय और दूसरी वैश्विक कंपनी बन गई है।

मैनकाइंड समूह के चेयरमैन और संस्थापक आर.सी. जुनेजा ने कहा कि प्रोजेस्टेरॉन मासिक धर्म चक्र, इम्प्लांटेशन और गर्भावस्था के सफल रखरखाव में शामिल एक प्राकृतिक हार्मोन है। प्रजनन प्रक्रिया के विभिन्न चरणों के दौरान प्रोजेस्टेरॉन की कोई भी कमी से बांझपन, मासिक धर्म संबंधी विकार और गर्भपात हो सकता है। डाइड्रोजेस्टेरॉन में प्राकृतिक प्रोजेस्टेरॉन के समान आणविक संरचना होती है, लेकिन इसके जैव उपलब्धता को बढ़ाया गया है तथा इसके बहुत कम साइड इफेक्टक हैं। इस दवा को विकसित करने के लिए मैनकाइंड रिसर्च सेंटर के 400 वैज्ञानिकों की एक टीम को नौ साल लग गए, जो व्यावसायिक रूप से उपलब्ध एकमात्र रेट्रोप्रोजेस्टेरॉन है। डाइड्रोजेस्टेरॉन की निर्माण प्रक्रिया बहुत जटिल है क्योंकि इसमें प्राकृतिक प्रोजेस्टेरॉन का रूपांतरण शामिल है।

कारदेखो को मिली 70 मिलियन डॉलर की फंडिंग

उदयपुर। देश की अग्रणी ऑटो टेक कंपनी कारदेखो को सीरीज डी राउंड में 70 मिलियन डॉलर की फंडिंग मिली है। कंपनी ने यह फंडिंग पिंग एन ग्लोबल वॉयज़र फंड, सनले हाउस कैपिटल मैनेजमेंट, सिकोइया इंडिया और हिलहाउस से प्राप्त की है।

कारदेखो के सीईओ और को-फाउंडर अमित जैन ने कहा कि इनमें पिंग एन ग्लोबल वॉयज़र फंड और सनले हाउस कैपिटल मैनेजमेंट कंपनी के नए इंवेस्टर हैं, जबकि सिकोइया इंडिया और हिलहाउस पहले भी कारदेखो में निवेश कर चुके हैं। पिंग एन ने कारदेखो के जरिये भारत में अपना पहला इंवेस्टमेंट किया है। यह चीन की फर्म है, जो दुनिया की दिग्गज फाइनेंशियल सर्विसेज़ कंपनियों में से एक है। इसके पास चीन के सबसे बड़े ऑटो पोर्टल ऑटोहोम के अधिकांश शेयर हैं। सनले हाउस कैपिटल मैनेजमेंट, ग्लोबल प्राइवेट इक्विटी फर्म एडवेंट इंटरनेशनल की सहायक कंपनी है। सिकोइया इंडिया और हिलहाउस का कंपनी में पहले से निवेश जारी है, कंपनी की अच्छी परफॉर्मेंस को देखते हुए इन्होंने फिर से कारदेखो में निवेश किया है।

एचडीएफसी लाइफ द्वारा संचय पार एडवांटेज प्लान लॉन्च

उदयपुर। एचडीएफसी लाइफ इंश्योरेंस कंपनी ने अपने नये प्रॉडक्ट एचडीएफसी लाइफ संचय पार एडवांटेज लॉन्च की घोषणा की है, जो नॉन-लिंक्ड, सहभागिता (पार्टिसिपेटिंग) जीवन बीमा योजना है एवं नियमित रूप से आजीवन आय और पूरे जीवन के लिए सुरक्षा प्रदान करते हुए, ग्राहकों की आवश्यकताओं के लिए एक समग्र समाधान प्रस्तुत करती है। एचडीएफसी लाइफ संचय पार एडवांटेज आय के दो विकल्प प्रदान करता है। पहला तत्काल आय विकल्प और दूसरा आस्थगित (डिफर्ड) आय विकल्प। एचडीएफसी लाइफ संचय पार एडवांटेज में जीवन रक्षा लाभ भुगतान को एक्रू करने या निकालने का लचीलापन, पूरे जीवन का कवर व आजीवन आय, गारंटीकृत लाभ के साथ आस्थगित आय विकल्प तथा कर लाभ की मुख्य विशेषताएं हैं। संचय पार एडवांटेज सीमित प्रीमियम भुगतान विकल्प प्रदान करता है। ग्राहक अपनी प्रीमियम राशि, प्रीमियम भुगतान अवधि और अपनी मौजूदा जरूरतों और वित्तीय लक्ष्यों के आधार पर आय विकल्प चुन सकता है।

वेदांता बेस्ट आर्गेनाइजेशन कंट्रीब्यूटिंग इन स्पोटर्स से सम्मानित

उदयपुर। वेदांता लि. को फिक्की इंडिया स्पोटर्स अवार्ड्स-2019 में खेलों के क्षेत्र में श्रेष्ठ योगदान देने वाले संगठन 'बेस्ट आर्गेनाइजेशन कंट्रीब्यूटिंग इन स्पोटर्स' पुरस्कार से नवाजा गया। सेवानिवृत न्यायमूर्ति मुकुल मुग्दल की अध्यक्षता वाली ज्यूरी ने देश में अलग-अलग खेलों की दिशा में एक बेहतर इकोसिस्टम तैयार करने की दिशा में वेदांता के योगदान को स्वीकार करते हुए उसे यह पुरस्कार देने के लिए चुना। वेदांता स्पोटर्स के अध्यक्ष अनन्य अग्रवाल ने नई दिल्ली में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में वेदांता लि. की ओर से ओडिशा सरकार में खेल मंत्री तुषाकरांति बेहेरा से यह पुरस्कार ग्रहण किया।

अनन्य अग्रवाल ने कहा कि 'बेस्ट आर्गेनाइजेशन कंट्रीब्यूटिंग इन स्पोटर्स' अवार्ड पाकर सम्मानित महसूस कर रहे हैं। यह सम्मान हमें आने वाले समय में और अधिक निष्ठा एवं समर्पण के साथ काम करते रहने की प्रेरणा देगा। हम देश में खेलों के स्तर को और ऊंचा उठाने के प्रयासों को लेकर और अधिक समर्पित होंगे और देश के लिए अधिक से अधिक सम्मान हासिल करने वाले खिलाड़ी तैयार करने के लिए प्रयासरत रहेंगे।

ओयो टाउनहाऊस उदयपुर में लॉन्च

उदयपुर। ओयो होटल्स एंड होम्स एक युवा होटल स्टार्टअप, आज दुनिया के होटलों, घरों और रिक्त स्थान की दूसरी सबसे बड़ी श्रृंखला है, ने उदयपुर में ब्रांड टाउनहाऊस के शुभारंभ की घोषणा की। ओयो टाउनहाऊस एक होटल, घर, माल की दुकान और कैफे का एक अनूठा मिश्रण है और इसे मिलेनियल के यात्रियों को टारगेट किया गया है, जो प्रीमियम इकोनोमिक आवास की इच्छा रखते हैं। उदयपुर में पहला टाउनहाऊस सहेली मार्ग, यूआईटी सर्कल में स्थित 30 कमरे की संपत्ति है। वर्तमान में ओयो टाउनहाउस भारत, यूके और यूएस में है। ओयो होटल्स एंड होम्स, चीफ आपरेटिंग आफिसर, आपरेटेड बिजनेस, अंकित टंडन ने कहा कि उदयपुर शहर में भारत के सबसे बड़े मध्य-बाजार बुटीक ब्रांड ओयो टाउनहाऊस को शुरू कर खुश हैं। अनूठे आतिथ्य अनुभव के साथ, यह पेशकश विशेष रूप से व्यापारी यात्रियों और मिलेनियल्स की आवश्यकताओं को पूरा करेगा, जो शहर में एक समकालीन सेट के भीतर, सुविधा, आराम, पैसे के मूल्य की तलाश करते हैं। हेमेंद्र पाठक के साथ साझेदारी कर हमें खुशी है। हम उनकी संपत्ति को एक सुंदर ओयो टाउनहाउस में परिवर्तित करने की दिशा में काम कर रहे हैं।

जिंक फुटबाल को मिला 'बेस्ट ग्रासरूट्स फुटबाल प्रोजेक्ट आफ द इअर' पुरस्कार

उदयपुर। हिंदुस्तान जिंक लि. की पहल जिंक फुटबाल को फुटबाल दिल्ली के पहले अवार्ड्स नाइट में 'बेस्ट ग्रासरूट्स फुटबाल प्रोजेक्ट आफ द इअर' पुरस्कार से नवाजा गया।

जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने कहा कि जिंक फुटबाल का देश में अपने तरह का बिल्कुल अलग इनिशिएटिव राजस्थान में 12 कम्यूनिटी फुटबाल सेंटर्स के माध्यम से 350 जुनूनी बच्चों को प्रशिक्षित फुटबाल ट्रेनरों के माध्यम से तराशने और इसके माध्यम से भारतीय फुटबाल के विकास में योगदान देने के लिए चलाया जा रहा है। इस पहल के तहत जिंक ने उदयपुर के पास स्थित जावर में देश की पहली तकनीकी आधारित फुटबाल ट्रेनिंग अकादमी शुरू की है। इसे जिंक फुटबाल नाम दिया गया है और इस अकादमी में अभी अंडर-16 आयु वर्ग के 40 बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ फुटबाल की कला सीख रहे हैं।

फुटबाल दिल्ली के अध्यक्ष साजी प्रभाकरण ने कहा कि जिंक फुटबाल एक शानदार पहल है और बेस्ट ग्रासरूट फुटबाल प्रोजेक्ट आफ इअर पुरस्कार का सच्चा हकदार है।

स्कॉलरशिप की घोषणा

उदयपुर। नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स (एनसीपीए) और सिटी इंडिया ने संयुक्त रूप से हिन्दुस्तानी म्युजिक (वोकल या गायन-ख्याल, ध्रुपद, मेलोडी इंस्ट्रूमेंट्स-सितार, सरोद, वायलिन, बांसुरी, हारमोनियम इत्यादि) में उन्नत प्रशिक्षण के लिये स्कॉलरशिप प्रोग्राम की घोषणा की है। इसके लिये समूचे भारत के 18 से 35 साल की उम्र के संगीतकार 31 दिसंबर तक आवेदन कर सकते हैं। छात्रवृत्ति का मूल्य अप्रैल 2020 से मार्च 2021 तक के लिये 10,000 रूपये प्रतिमाह है। अभ्यर्थी आवेदन (म्यूजिक एजुकेशन पर बायो-डेटा) ईमेल के जरिये या एक लिफाफे में सिटी-एनसीपीए स्कॉलरशिप फॉर यंग म्यूजिशियंस 2020-21 (इंडियन म्यूजिक) लिखकर नेशनल सेंटर फॉर द परफॉर्मिंग आर्ट्स, एनसीपीए मार्ग, नरिमन प्वाभइंट, मुंबई 400021 पर भेज सकते हैं।

डॉ. सुवर्णलता राव, हेड प्रोग्रामिंग- इंडियन म्यूजिक, एनसीपीए ने कहा कि इस प्रोग्राम के माध्यम से युवा प्रतिभाशाली म्यूजिशियंस तथा संभावनाशील कलाकारों को स्कॉलरशिप प्रदान की जाती है। चुनिंदा प्रतिभागियों को कुल 9 स्कॉलरशिप्स दी जायेगी।

आवेदन में व्यक्ति के नाम, जन्म तारीख, पता, सम्पर्क व वैकल्पिक नंबर, प्रोफेशनल क्वालिफिकेशन, ईमेल आइडी, म्यूजिक टीचर-गुरू, प्रशिक्षण के कुल वर्ष, उपलब्धियों, पुरस्कारों, स्कॉलरशिप एवं परफॉर्मेंस के साथ ही अन्य महत्वपूर्ण विवरण का ब्यौरा शामिल करना होगा। चुने गये अभ्यर्थियों को ईमेल या फोन के माध्यम से सूचित किया जायेगा। उन्हें ऑडिशन के लिये फरवरी 2020 में एनसीपीए, मुंबई में उपस्थित होना होगा। चयन समिति का निर्णय अंतिम होगा।

महाराणा मेवाड़ स्कूल को इन्टरनेशनल स्कूल अवार्ड

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल को ब्रिटिश काउंसिल इन्टरनेशनल स्कूल अवार्ड से नवाजा गया है। उल्लेखनीय है कि ये अवार्ड चार वर्षों के लिए दिया जाता है। समारोह पूर्व हम अपने विद्यार्थियों को अनिश्चित भविष्य के लिए कैसे तैयार कर सकते हैं?'' विशय पर पैनल चर्चा हुई। यह अवार्ड अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में नवीन आयामों और मापदंडों के उत्कृष्ट विकास एवं विदेश के ख्यातिनाम शैक्षिक संस्थानों के साथ सांस्कृतिक और अकादमिक गतिविधियों के आदान-प्रदान के मापदंडों पर खरा उतरने के लिए प्रदान किया गया है। सम्मान स्कूल के प्राचार्य, संजय दत्ता एवं समन्वयक शेखर कुमार ने प्राप्त किया।

एक माह मणिपुरी....

(पृष्ठ तीन का शेष)

वैसे इनका दैनिक भोजन ही इन जानवरों को मारकर खाना और चावल की बनी शराब पीना है।

एक जगह अच्छे मनोरम खुले स्थान पर हमने नागा स्त्री-पुरुषों का झुण्ड देखा। उनके बीच में एक खम्भा रोप रखा था जिससे एक भीमकाय भैंसा बंधा हुआ था। उसके चारों ओर सजेधजे स्त्री-पुरुष उस भैंसे के शरीर पर हर कहीं तीर की मार करते हुए नृत्यमग्न थे।

भैंसा लहूलुहान हुए घायल था। जब वह अध मरा हो गया तो उसका सिर अलग कर दिया गया। ऐसा दृश्य मैंने पहले कभी नहीं देखा था। मुझे उल्टियां होने लगीं और बेचैनी बढ़ती देख वहां से अपनी राह नापनी पड़ी।

पुरुष और स्त्रियां नीचे कमर में लाइन क्लाथ पहनती हैं और शरीर पर चादर ओढ़े रहती हैं। कहीं-कहीं आदमी अर्धनग्न भी रहते हैं। स्त्रियां अधिक मेहनती होती हैं। औरतें अपने बच्चे-बच्चियों को पीठ पर चादर में लपेटे रहती हैं जैसे बन्दरी अपने बच्चे को अपने सीने से चिपकाये रहती है उसी प्रकार बच्चा भी मां की पीठ पर चिपका रहता है और अपने आपको अधिक प्रसन्न और सुखी अनुभव करता है। समाज में पुरुष और स्त्रियों का समान दर्जा है। इनका जाति संगठन बड़ा सुदृढ़ है। प्रायः हर गांव में इनका अपना मुखिया होता है जिसकी सभी इज्जत करते हैं। एक-दूसरे के कामकाज में सभी मदद करते हैं।

सारे मणिपुर में करीब बीस प्रकार की भाषा बोली जाती है इसलिए एक-दूसरे की भाषा समझना बड़ा कठिन हो जाता है। आवागमन के साधनों के नितान्त अभाव के कारण इन लोगों ने पहाड़ों और जंगलों की आड़ में अपनी सभ्यता, संस्कृति तथा सत्ता को बचाये रखा है परन्तु आने वाले समय में ये वैसे के वैसे रह पायेंगे, नहीं कहा जा सकता। धीरे-धीरे ये लोग इसाई बनते जा रहे हैं। इनके रीति-रिवाज, रहन-सहन, गीत-नृत्य तथा बात और बोली तक में इसाईपन की छाप देखी जा रही है।

डॉ. धींग सहित विशिष्ट विभूतियां सम्मानित

कोलकाता में 8 दिसम्बर को विचार मंच द्वारा आयोजित समारोह में डॉ. दिलीप धींग को आचार्य नानेश स्मृति सम्मान के तहत मुक्ताहार, शॉल, जैन सरस्वती की कलात्मक अनुकृति युक्त स्वर्ण पदक एवं एक लाख रुपये की राशि मेघालय के राज्यपाल तथागतराय, पूर्व राज्यपाल केसरीनाथ त्रिपाठी एवं समाजसेवी अजित चोरड़िया द्वारा प्रदान की गई।

मंच के मंत्री प्रख्यात समाजसेवी सरदारमल कांकरिया ने डॉ. धींग को सरस्वती-पुत्र कहते उनके लेखकीय अनुदान को बहुमूल्य बताया। डॉ. तारा दुगड़ ने डॉ. धींग को जैनविद्या के सर्वाधिक लोकप्रिय एवं बहुपठित साहित्यकार कहा। डॉ. धींग ने भारतीय भाषाओं के एकात्म-दर्शन के लिए संस्कृत के साथ प्राकृत जानना जरूरी महसूस किया।

समारोह में सम्मान श्रृंखला के अन्तर्गत केसरीनाथ त्रिपाठी को विजयसिंह नाहर सम्मान, डॉ. जितेन्द्र बा. शाह को हेमचन्द्राचार्य साहित्य सम्मान, डॉ. ओम निश्चल को कल्याणमल लोढ़ा सारस्वत साधना सम्मान, डॉ. राजीव रावत को विष्णुकांत शास्त्री सम्मान, डॉ. श्वेता जैन को गणेश ललवाणी सम्मान, डॉ. किरण सिपानी को फूलकँवर कांकरिया सम्मान और पार्थ चटर्जी को इन्द्र दुगड़ सम्मान प्रदान किया गया। मंच के अध्यक्ष पन्नालाल कोचर ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर रिखबदास भंसाली, चंचलमल बच्छावत, रिद्धकरण बोथरा सहित विभिन्न क्षेत्रों के अनेक विशिष्टजन उपस्थित थे। इससे पूर्व 7 दिसंबर को डॉ. दिलीप धींग की अध्यक्षता में जैन विद्या राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन में एक दर्जन विद्वानों ने शोधपत्र पढ़े। संयोजन डॉ. लता बोथरा ने किया।

एक्सकॉन 2019 में सैनी के उत्पाद

उदयपुर। विश्व में सबसे बड़े उपकरण निर्माताओं में से एक, सैनी ने एक्सकॉन 2019 में 12 से ज्यादा नए प्रॉडक्ट्स का अनावरण किया है। यह दक्षिण एशिया में सबसे बड़ी निर्माण उपकरण प्रदर्शनी है। सीआईआई द्वारा आयोजित और इंडियन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट मैन्युफैक्चर्स एसोसिएशन द्वारा समर्थित, एक्सकॉन भारत एवं विदेश के 1250 से अधिक प्रदर्शकों को आकर्षित करती है।

इस मेगा ट्रेड फेयर में कारोबारी दिग्गजों, नीतिनिर्माताओं और वेंडरों का जमघट लगता है। यह सैनी के लिए अपने नए उत्पाद लॉन्च करने तथा तकनीकी रूप से उन्नत डिजाइन, विश्वसनीयता एवं चलाने में आसानी के लिए दुनियाभर में लोकप्रिय कंस्ट्रक्शन मशीनों की अपनी मौजूदा रेंज को प्रदर्शित करने के लिए एक उपयुक्त मंच है।

सैनी के स्टॉल में अत्याधुनिक संपूर्ण एक्सकेवेटर रेंज, ट्रक क्राउलरऔर ऑल टेरेन क्रेन्स, रोड इक्विपमेंट जिसमें ग्रेडर्स, माइनिंग उपकरण और पाइलिंग रिग शामिल हैं, के लिए ग्राहकों के बीच काफी आकर्षण देखा गया।

स्टार्टअप प्रतिभाओं के लिए मील का पत्थर साबित होगा 'ग्लोबल एंट्रप्रेन्योरशिप समिट'

उदयपुर। उद्योग जगत की दुनियाभर की नामी हस्तियों की मौजूदगी में आईआईटी खड़गपुर की ओर से 31 जनवरी से 2 फरवरी तक ऐतिहासिक वैश्विक उद्यमिता शिखर सम्मेलन (ग्लोबल एंट्रप्रेन्योरशिप समिट) का आयोजन होने जा रहा है।

आईटाईटी की एंट्रप्रेन्योरशिप सेल के इस शिखर सम्मेलन 'जीईएस' में प्रतिभागियों को उद्योग जगत के वैश्विक स्तर पर हो रहे नवाचारों, व्यापारिक रणनीतियों, संघर्ष से सफलताओं तक की प्रेरणास्पद कहानियों और नए स्टार्टअप्स के बारे में बहुत कुछ जानने को मिलेगा। साथ ही प्रतिभागियों में से बेहतरीन प्रतिभाओं को इंटर्नशिप/जॉब्स के अवसर भी मिलेंगे। जीईएस के लिए रजिस्ट्रेशन्स शुरू हो चुके हैं तथा प्रतिभागिता सुनिश्चित करने के लिए वेबसाइट http://reg-ges.ecell-iitkgp.org पर पंजीकरण करवाया जा सकता है। रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि 25 दिसंबर है। उदयपुर शहर के एंट्रप्रेन्योर्स और स्टार्टअप से जुड़ी प्रतिभाएं इसमें शामिल होकर विश्वस्तरीय एक्सपोजर पा सकती हैं। गौरतलब है कि आईआईटी खड़गपुर में 31 जनवरी से 2 फरवरी 2020 तक यह समिट होगा।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की 100 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से कुछ तो अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/
आदिवासी जीवनधारा	395/
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/
राजस्थान के लोकनृत्य	200/
गुजरात के लोकनृत्य	200/
राजस्थान के लोक देवी देवता	150/
भारतीय लोकमाध्यम	75/
अजूबा भारत	200/
पाबूजी की पड़	50/
लोककलाओं का आजादीकरण	250/
उदयपुर के आदिवासी	250/
निर्भय मीरां	250/
रंग रूड़ो राजस्थान	100/
कुंवारे देश के आदिवासी	100/
जन्हें मैं जानता हूं	100/
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
गवरी	60/
राजस्थान के थापे	150/
कठपुतली	60/
जनजातियों में गाथा गायकी	350/

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	**11000/**
विशिष्ट सदस्य	**5000/**
आजीवन सदस्य	**3000/**
शब्दरंजन के सहयात्री	**1000/**
साहित्यिक चौपाल	**500/**
वार्षिक संस्थागत	**300/**
वार्षिक व्यक्तिगत	**250/**

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

अजब-गजब

हर रेल रूकती है, टंट्या को झुकती है

टंट्या भील एक ऐसा क्रान्तिकारी योद्धा था जिसने अंग्रेजों के नाक में जबर्दस्त दम कर रखा था। भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान इस योद्धा का ऐसा दमखम देख इसे 'इण्डियन राबिन हुड' नाम से सम्बोधित किया गया। मध्यप्रदेश के महू क्षेत्र के निवासी आज भी अपने इस नायक के प्रति पूर्ण श्रद्धा और आस्था लिये है। धड़ेती के रूप में अंग्रेजों से लूटपाट कर सारा धनमाल गरीब आदिवासियों में बांट देता था। खण्डवा के पंधाना तहसील के बड़दा में 1842 में भाऊसिंह के वहां उसका जन्म हुआ।

कहा जाता है कि निमाड़ में ज्वार के पौधे को तंटा कहते हैं जो सूखने के बाद लम्बा, ऊंचा और पतला हो जाता है। टंट्या भी बचपन में ऐसा ही दुबला पतला था इसलिए वह टंट्या कहलाने लगा।

टंट्या कई बार पुलिस के हत्थे चढ़ा मगर हर समय गच्चा देकर भाग निकलता था। ऐसा माना जाता है कि वह बड़ा मिलिस्मी था जिसके पास अनेक रहस्यमय शक्तियां सिद्ध थीं। इन्हीं शक्तियों के कारण वह एक ही समय में 1700 गांवों में ग्रामसभा आयोजित कर सारे झगड़े हल कर देता। अंग्रेजों के दो हजार सैनिकों द्वारा उसका पीछा करने पर भी वह उनके हत्थे नहीं चढ़ा।

समय का फेर ऐसा रहा कि एक दिन वह अंग्रेजों के जाल में फंसा कि पातालपानी रेल्वे ट्रेक पर ही वह बुरी तरह मार दिया गया। कहा तो यह भी जाता है कि 1889 में धोखे से अपने ही लोगों द्वारा वह पकड़वा दिया गया। और उसे फांसी दे दी गई।

पातालपानी से काला कुण्ड का रेल मार्ग काफी खतरनाक है। टंट्या की हत्या के बाद वहां से गुजरने वाली हर ट्रेन किसी न किसी हादसे का शिकार होती रही ऐसी स्थिति में वहां एक मन्दिर का निर्माण कर रेल्वे स्टेशन बना दिया गया। तब से जो भी ट्रेन गुजरती है, ड्राईवर गाड़ी को रोककर; सिर झुकाकर ही आगे बढ़ता है। उसके बाद हर गाड़ी 'टंट्या मामा' से सुखद यात्रा का शकुन लिए गंतव्य तक पहुंचती है। मनासा के प्रसिद्ध लोकद्रष्टा डॉ. पूरन सहगल ने टंट्या भील पर खोजपूर्ण गहन अध्ययन कर उत्तम प्रकाशन दिया है।

इधर एक बुलेट के मंदिर को सलाम

ओम बन्ना एक पवित्र दर्शनीय स्थल है जो राजस्थान में जोधपुर-पाली हाईवे पर चोटीला गांव के पास एक पेड़ से कुछ दूर स्थित है। वहां ओम बन्ना के फोटो के समक्ष अखण्ड दीप प्रज्ज्वलित है और पास ही उनकी बुलेट 350 बाइक खड़ी है जिसे उधर से गुजरने वाला हर राहगीर नमन कर अपनी मन धारी साध पूरी करता है।

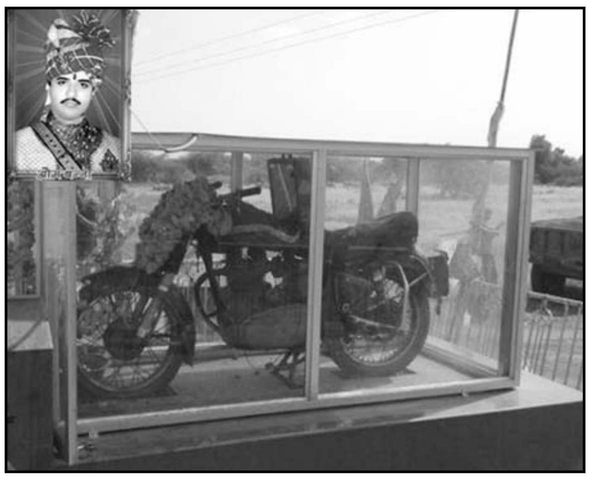

ओम बन्ना, ओमसिंह राठौड़ चोटिला ठिकाने के ठाकुर जोगसिंहजी के पुत्र थे। 2 दिसम्बर 1988 को वे अपनी 350 सीसी रॉयल एनफील्ड बुलेट पर अपने ससुराल बगड़ी, साण्डेराव से अपने गाँव लौट रहे तभी एक पेड़ से टकराने से उनका एक्सीडेंट हो गया और वे मृत्यु को प्राप्त हुए। इस स्थान पर प्रतिदिन ही कोई न कोई वाहन दुर्घटनाग्रस्त हो जाया करता था। यह रहस्य ही बना रहता। कई लोग यहाँ अपनी जान गँवा चुके थे।

ओम बन्ना की रॉयल एनफील्ड को उठा दुर्घटना के बाद वहां पुलिस पहुंची थाने ले गई। बुलेट को थाने में खड़ा कर दिया। अगली सुबह बाइक यहां से गायब होने पर खोजबीन की तो गाड़ी ओम बन्ना के दुर्घटनास्थल पर मिली। रोज ऐसा ही होने कि दिन में बुलेट को थाने में लाती और अगली सुबह वो दुर्घटना वाले स्थल पर पाई जाती।

तब एक दिन पुलिस ने बुलेट को चैन में बांधा। उसकी टंकी से पेट्रोल निकाल दिया। फिर भी यही होता रहा। ऐसा देख ओम बन्ना के परिवारवालों ने बुलेट को दुर्घटना वाले स्थल पर रखवा दिया। एक दिन ओम बन्ना ने सपने में आकर घटना वाले स्थल पर अपना स्थान बनाने को कहा। फलत: वहां शीशे में बंद बुलेट को रख दिया गया। आज तो यह स्थल एक मन्दिर के यप में पूजा स्थल बना हुआ है।

लोग बताते हैं कि इस रास्ते से गुजरने वालों की कई बार ओम ने मदद की है। उन्होंने वाहनों को दुर्घटना से बचाने तथा चालकों को रात्रि में दुर्घटना से सावधान करते हुए उन्हें असामयिक मौत का शिकार होते बचाया है। उसके बाद आज तक वहाँ कोई दुर्घटना नहीं हुई। जिस जगह पर ओम बन्ना की गाड़ी की पूजा की जाती है उस स्थल को कोई बुलेट बाबा, कोई बुलेट वाले बाबा तो कोई बुलेटवाले ओम बाबा के नाम से जानते हैं लेकिन उनका सबसे प्रसिद्ध नाम ओम बन्ना है।

राई बुड़िया का स्वांग

-डॉ. सुरेश सालवी-

उदयपुर सम्भाग के वागड़ क्षेत्र के डूंगरपुर तथा बांसवाड़ा में राई बुड़िया का स्वांग प्रसिद्धि लिए है। राई बुड़िया स्वांग में एक पात्र नहीं होकर बुड़िया पुरुष तथा राई उसकी सहधर्मिणी है। मेवाड़ के आदिवासी भीलों में गवरी नाम से एक सशक्त आनुष्ठानिक नृत्य प्रचलित है।

यह रक्षाबन्धन के दूसरे दिन ठण्डी राखी से प्रारम्भ होकर चालीस दिन तक नाचा जाने वाला धार्मिक नृत्यानुष्ठान है। समूहबद्ध हर तीसरे वर्ष भील समुदाय के व्यक्ति देवी गवरजा का आशीष पाकर ही इसका प्रदर्शन प्रारम्भ करते हैं और जहां-जहां उस गांव की बहिन-बेटियां ब्याही होती हैं, वहां-वहां दिनभर शौकिया प्रदर्शन देते हैं।

बुड़िया इस गवरी में मुख्य नायक होता है जो शिव-भस्मासुर का प्रतीक तथा राई उसकी अर्द्धांगिनी शिव-पत्नी पार्वती का स्वरूप लिए होती है। शिव-भस्मासुर का आख्यान बहुत प्रसिद्ध है जिसका उल्लेख पुराण तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों में मिलता है। गवरी के अभिनेता खेल्ये कहलाते हैं। प्रत्येक भील-परिवार का प्राणी इसमें भाग लेता है। महादेव शिव भीलों के आदिदेव हैं। इनके प्रति आस्था स्वरूप गवरी लेने की मनौती लेते हुए गांव की खुशहाली, फसल की लहलहावट, अकाल नहीं पड़ने तथा पशुओं पर किसी तरह का भार नहीं आये जैसी मनोकामना लिए अभिनेता गांव-गांव चलते, ब्रह्मचर्य का पालन करते, एक समय भोजन करते हैं। मांस मदिरा से दूर रहते हैं। पैदल खुले पांव चलते, आंगन सोते मन वचन काया से पवित्र अहिंसक बने रहते हैं।

गवरी में भाग लेने वाले सभी पुरुष होते हैं। दिनभर स्वांग तथा लीलापरक बारी-बारी से सांग-प्रहसनों का प्रदर्शन राहगीरों के लिए कौतुक और कुतूहल पैदा किये रहता है। हर स्वांग के प्रारम्भ और समाप्ति पर सभी खेल्ये गोलाई में समूह नृत्य करते हैं जिसे घाई कहते हैं। इसमें बुड़िया उस घाई के बाहर रहता उल्टे पांव, पाछपगे चलता सबको नियंत्रित किये रहता है। यह घाई पृथ्वी की गोलाई की सूचक है और शिव सृष्टि के नियंता बने हुए लगते हैं।

गवरी के समय देवी गवरजा का भोपा साथ में रहता है। देवी की उपस्थिति बनी रहती है। यह देवी जगत्जननी है। पार्वती भीलों की बहिना है जो मृत्युलोक में अपने स्वजनों से मिलने आती है और सवा माह की कौल पूरी होने पर कैलाश पर्वत लौट जाती है।

वागड़ क्षेत्र में गवरी का प्रदर्शन नहीं होता है। यह केवल मेवाड़ क्षेत्र में ही प्रचलित है किन्तु उधर निवासरत जो भील हैं उनसे मिलने मेवाड़ से जो भील जाते हैं या समय सन्दर्भ से उधर बस गये हैं वे गवरी की स्मृति-आस्था को बनाये रखने के लिए दीवाली के दूसरे दिन राई तथा बुड़िया का स्वरूप धारण कर सबका रंजन करते हैं। इस समय जो गीत गाया जाता है उसके साथ कुंडी, ढोलक तथा थाली बजाई जाती है। गीत है-

वोरा मर गइयुं रे, वोरी वाट जोवै
आमती वोरी अेकली रे।
वोरौ मर गइयुं, वोरी साती कुटी ने रोवै
आमती वोरी अेकली रे।
वोरी मर गइयुं, वोरौ वाट जोवै रे
आमती वोरौ अेकलौ रे।
वोरी मर गइयुं, वोरौ साती कुटी ने रोवै
आमती वोरौ अेकलौ रे।
वोरा नी वोरी मर गइयुं ने सोरां वाट जोवै रे
आमती सोरां अेकलुं रे।

अर्थात् - वोरा, गांव में लेनदेन करने वाला वणिक, मर गया है। उसकी जोड़ायत, पत्नी, वोरी वाट जो रही, उसकी प्रतीक्षा कर रही है। वह अकेली हो गई है। वोरा मर गया, वोरी छाती पीटती विलाप कर रही है। वोरी मर गई, वोरा प्रतीक्षा कर रहा है। वोरा अकेला है। वोरी मर गई। वोरा छाती पीट रो रहा है, अकेला है। वोरा और वोरी मर गये और उनके लड़के इन्तजार कर रहे हैं। अब लड़के अकेले रह गये हैं।

यह शुद्ध हास्य- प्रहसन ही है। गीत में कभी वोरा की मृत्यु पर वोरी तो कभी वोरी की मृत्यु पर वोरा विलाप करता पाया जाता है। ऐसी स्थिति में कभी वोरा तो कभी वोरी एक-दूसरे के अभाव में दु:खी होते हैं और अन्त में उनकी संतान-छोरे-टाबर-बाल बच्चे अकेले रह जाते हैं।

उल्लेखनीय है कि गवरी पर विशेष शोध कर सन् 1968 में डॉ. महेन्द्र भानावत ने सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की थी।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।